CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

भोजपुरी अकादमी

भोजपुरी अक...

प...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12·1

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पँखुरी भइल हजार

(बरवै-संग्रह)

रचयिता

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

भोजपुरी अकादमी

पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक

भोजपुरी अकादमी

बोरिंग रोड, पटना-१

रचयिता

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

© प्रकाशक

प्रथम संस्करण, मार्च १९८४

दाम

पनरह रुपया

मुद्रक

कालिका प्रेस

आर्यकुमार रोड, पटना-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशकीय

पँखुरी भइल हजार भोजपुरी अकादमी के २३ वाँ फूल ह। ब्रजभाषा आ अवधी में 'बरवै' छन्द में रचित मनमोहक भाव-भासा वाला काव्य के रसास्वादन जे पाठक कइले होइहें उनुका भोजपुरी बरवै के एह संग्रह में एगो अजगुत पहचान मिली। मात्रिक आ वर्णिक दूनों तरह के छंदन के प्रयोग में माहिर भोजपुरी के जानल-मानल कवि श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के एह बरवै-संग्रह के आपन खास खूबी बा। पारंपरिक कृथ्यन से अलगा हटि के तींत-मीठ, घाम-सीत, हरहर-पटपट वाला आधुनिक जीवन के अनुभूतिअन के अरक से पेहम १३२ गो बरवै मुक्तकन के लर वाला ई कविता-संग्रह भोजपुरी साहित्य खातिर कवि के आन-आन अवदानन अस अनूठे बा। बहुत कुछ देखला-सुनला आ भोगला-अँगेजला के बाद उनुका सधल-मँजल हाँथ से एगो अभिनव प्रयोग भइल बा जेकरा के भर सक सभे सवादी-सराही। मातृभासा के मोल-महातम बढ़वनिहार एह संग्रह के कतने धाराप्रवाह उकुतिव के हबेख कहावतन अस होखे लागी। एह मनहर कृति के प्रकाशन से अपना घोषित उद्देश्य के पूरा करत जात अकादमी रचयिता के आभार मानतिआ आ पुस्तक के सुघर-सुभेख छपाई खातिर 'कालिका' प्रेस के धन्यवाद देतिआ।

१० मार्च, १९८४ ई०

—हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
निदेशक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

भोजपुरी सेवा के सवख-साध पछिला पचीस बरिस से बा। अनकर कहल सुने के ललक अतना रहे जे अपने कहे के उदवेग हालाहाली ना होखे। अर्जुन कुमार अशांत जी का संग-साथ में आधुनिक भोजपुरी काव्य का निअरा-पँजरा जाये के सुजोग जूटल। १९ बरिस का अदनारे उमिरि से घर आ बाहर के जबाबदेही के पुरहर भार सम्हारत हमार माथ आ करेज कइसे-कइसे पकठात गइल कहि ना सकीं। असहार रहतो हाथ ना पसारे आइल; अपार अन्हारो में आँखि ना मुँदाइल। गतर-गतर में खरकोंच लागत गइल, रोंआँ-रोंआँ में आलपीन गड़ात गइल। ठार आ आँचि अतना ना अङेजल गइल कि सरद-गरम के परवाहे ना रहल। अइसे त हरेक जिनिगी एगो 'केस हिस्ट्री' होले, तबो कवनो-कवनो के खासिअत होला। हमरा जमला-बढ़ला, रहला-सहला के जे तनिको जानल-समुझल चाही तेकरे हमार आचार सहाउर लागी, आन का ना। हमार बात-बिचार अप्रभावित नइखे रहल; भरसक केकरो ना रहि सके। तबो कुछ ना कुछ आपन खास एकरा में अइसन बा जे लखनिहार का जरूरे लउकी। एह संग्रह में हमार रूखर-आखर उचार साहित्य, संस्कृति, धर्म आ राजनीति में लागल सही आदमी के सुपट राह अस लागी, जहुअवनिहार भरम-जाल ना।

१९७० में सीवान में श्रद्धेय त्रिलोचन शास्त्री जी का मुँह से हरहरात अवधी 'बरवै', के सएकड़ पंक्तिन के सुनि के निहाल भइल रहीं। बस से लवटत खा छपरा-पहलेजा का बीचे अनेयासे गुनगुनात आठ गो बरवै हमरो से कहा गइल—'बिसइल बनलि बजरिया निसइल लोग; पसरत जात दिनवन्हीं नवका रोग'। पटना आके 'बरवै' कहे के लकम पाँच-छव महीना ले सेह धराइल जे एक-एक बइठकी में आठ-आठ गो रचा जाय। एह तरे १३२ बेर के सिरिजना का रूप में ई संग्रह लखार भइल हा। एकरा के चाहे अनहोनी कहल जाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहे आउर कुछ, पर ई साँच ह कि एक बेरि के उठावल कलम से मोटामोटी एके भाव के आठ-आठ बरवै उतरत गइलन स आ देखते-देखत १३२ गो के लर लागि गइल। इन्हनी के बरवै-गीतो कहल जाई त कवनो बेजांइ ना होई।

बरवै लिखे के प्रेरणे ना बलुक एह संग्रह के पहिल वांवों (गुलहजारा) धरे में त्रिलोचन जी के वृहत् बरवै-संग्रह 'अमोला' (अवधी) के अनुसरण रहे। हमरा के २१ बरिस ले छतरछाँह में रखनिहार भोजपुरी-प्राण स्व० पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी के परम प्रिय, सहज सनेही आदरणीय त्रिलोचन शास्त्री जी के अहैतुकी कृपा के अलम धइ के हम एह संग्रह के निहारे खातिर निहोरा करें के ढिठाई कइले बानीं। हमरा माथ पर हाथ देला खातिर हम शास्त्री के आजीवन आभारी बानीं।

पहिला बारह बरिस से अपना शील-सौजन्य से हमरा सोचाहट के समरथाइ बढ़वनिहार अनुजवत डा० अवधेश प्रधान जी (प्राध्यापक; हिन्दू विश्वविद्यालय) के आभार नेह-नाता का अछइत हमरा मन-परान पर बनल बा।

भोजपुरी अकादमी के पुस्तक-प्रकाशन के विज्ञापन का अनुसार पाण्डुलिपि तीन बरिस पहिले दिआइल रहे। एकरा के नीके तरे प्रकाशित कइला खातिर अकादमी के अत्यंत आभारी बानीं।

६ मार्च १९८४ ई०

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

शिवाजी पथ, यारपुर

पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निहोरा

चहलीं धरे चरन पर दिहिते माथ
काव्य 'कौशिकायन' सुनि काशीनाथ

हिन्दू युनिभरसिटी बनारस खास—
बीच ब्रिराजत 'बिड़ला' छात्रावास

ऊपर कमरा नंबर रहे पचास
मार्च पचीस बहत्तर, मिलल सुपास

विद्यार्थी समशील, प्रखर मतिमान
आतिथेय रहले 'अवधेश प्रधान'

रहसु 'अशोक द्विवेदी' जिनिकर मीत
सुजन 'त्रिलोचन शास्त्री' लेखा हीत

बनलि कोठरी त्र्यंबक—विद्यापीठ
रहीं सुनवले बरवै हम बनि ढीठ

तीनो मूरति ! दिहलीं सभें सुकान
पतिअइलीं जा हमरो कुछ अँखिआन

पूज्य त्रिलोचन जी से अरज हमार
लखीं समर्पित 'पँखुरी भइल हजार'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमिरन सरस्वती के करीं हमेस
रहसु आँखि का आगा ठाढ़ गनेस

देस-देस में देखीं कइसन भेस
धइले बाड़न बरम्हा, बिसुन, महेस

सरधा बढ़े निहारत तिनिकर पाँव
'नर-नारायन' के जिनि पवलन
~~नरवर जिनि पवलन 'नारायन'~~ नाँव

लागे नीक नयन के नया--पुरान
समुझ परे ना मन में आपन--आन

देहि--देहि में मानीं जनि हम भेद
पढ़ीं 'कैपिटल' बिसरे जनि दीं 'वेद'

रही टूटि के अलगा ना इनसान
जोरे चलल जगत के अब बिज्ञान

सठिआ गइले मठिया बइठि महंथ
चोंगा में अब जइहें पोंगा पंथ

हमरा 'जन-गन-मन' में बा बिसवास
रही 'मातरम् बंदे' भरत हुलास

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(९)

बिखइल बनलि बजरिया, निसइल लोग
पसरल जात 'दिनवन्हीं' नवका रोग

झलकल बलुरेती में जल के बास
छूटो छरपट, टूटो मन के आस

होले मोह रसरिया गर के फाँस
हहरल जात उमिरिया लहरल साँस

जाला भरल गगन में गरदा-धूरि
नइखे अब अन्हड़ के घरिया दूरि

आई बुढ़िया आन्हीं उठी हहास
झाई ऊखम, खुलि के बही बतास

उधिआ जइहें कतने सूखल पात
तरनाइल जिनि रहिहें खइहें लात

हटी तँवाइल धरती के अब गार्ह
आगम चलल जनावे पहिल असार्ह

झँउसी ना फुलवरिया बरिसी मेह
अँकुरी खातिर होई रसगर खेह

पँखुरी भइल हजार/२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भेंटल ना अँजुरी भर अब ले भीखि
उझिलल जाला घइलन मुँह से बीखि

उजरल घर चिरइँन के उचटल बाग
ठनकत बा पुलुइन में पइसल नाग

करते आइल कब से दवँक अङेज
जाई अइँठल कब ले कँवल करेज ?

उधिआइल कहँवाँ दो कतने टेर
धुरिआइल नयना के मोती ढेर

ईंटा झरल, पथल में परल चिहार
ढहल गहिड़ नदिया के ऊँच अरार

सरवत चलति उमिरि के गगरो सूखि
मेटल ना जिनिगी के अब ले भूखि

लागल बा परती के बहुत पियास
डाले अब धरती में बून अकास

निकसे पइसल हरहर माहुर खार
बहे मीठ भुँइयाँ पर अमरित-धार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फरल आम--जामुनि ना बइरि-खजूर
हमरा बगिया बीचे उगल बबूर

अइसन इहाँ भइल हा बानर--बाँट
फूल मिलल हा उनुका, हमरा काँट

इहे कहाला आपन-- आपन भाग
अंडा पारसु कोइलि सेवे काग

बदलल नइखे अब ले जग के रीति
झोंकल धूरि कहाला नीमन नीति

हरलीं हम, होखल हा उनुकर जीत
रोवल चहलीं हम, ऊ गवले गीत

रहीं धुँआते हम, ऊ करसु अँजोर
रहीं अबर हम सदईं ऊ बरजोर

फर हथिआवसु ऊ, हम पटईं मूर
रंग जमावसु ऊ, हम ढोईं घूर

कब ले अइसे मचते रही अन्हेर ?
अखड़े लागल अधिका आजु अबेर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५)

बदली देखीं कब ले इहाँ बयार
लागल नइखे अब ले नाव किनार

भादो के बा बरखा, बिगदल धार
छवले बा पँयड़ा में घोर अन्हार

बेरथ भइल भँवर में अब पतवार
पाल सम्हारत नइखे मन मतवार

उतरी कहिया ले ई लादल भार ?
जाई कइसे नइया नाचत पार ?

फूटल किसमत के बा टूटल नाव
काल निअन मुँह बवले बा दरिआव

इहाँ सुखाइल जाला हदसे खून
पहुँचल परलय बुझला एही जून

मारेले रहि-रहि के बिजुरी बान
फाटल चाहे सुनि के गरजल कान

काम चली ना कइले मनवाँ थोर
आजु निकासे के बा अँटकल भोर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काल्हु रहे जे जवरे नइखे आज
आगिल--पाछिल में बा लागल दाज

पाँव बन्हाइल, सगरो लागल ठेक
गाँव कहाला एके राह अनेक

नयनन में छवले बा पिअरी रोग
लउकेला एही से पीअर लोग

सूझे बतिया आपन सभका गूढ़
जूझे अनका कारन सेही मूढ़

बोलल जाला मुँह से चीकन बात
जरल करे जरि, जाला पटवल पात

बहिरन में बा बाँटल जात सनेस
आँखि मूँदि के चीन्हल जाला भेस

नइखे केहू पूछत, "का बा हाल ?"
आइल सभे बजावत आपन गाल

रहिते ऊहो निअरा हम ना दूरि
बनिते ऊ पनबदरा हमहूँ धूरि

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डोले तनिका खुलि के बन्हल बतास
पावे अब जनि हहरे अधिका साँस

आजु गरे लागल बा अइसन फाँस
सकदम में बा इहँवाँ परल हुलास

अँदकल जीव रहेला बड़ छपटात
अजगर सउँसे देहे बा लपटात

केहू मुसुको ले के ताके नाहिं
हँसी-खुसी सपनों में झाँके नाहिं

निहँसि-निहँसि के होला मनवाँ थोर
लउके जेने देखीं तेने लोर

रहल गीत गावे के अब ना चाव
भोर परे ना कबहूँ टभकत घाव

निकसे ना अब मुँह से नीमन बैन
परल सकेता तन, बा मन बेचैन

ऊखम ई बन्हले बा बहुते जोर
बिलमल बदरी कहँवाँ दो घनघोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होइ रहल जतरा के बहुत अबेर
केहू खातिर नइखे भइल सबेर

केहू बइठल देखे दिन के फेर
सुनि पावे ना केहू कवनो टेर

थथमा में बा बान्हल सभ के हाथ
कहला में नइखे अब आपन माथ

डोलि रहल बा डगमग - डगमग पाँव
परल भूखि लगला पर निसइल नाँव

रोअल के ना अब ले भइल पुछार
गवनिहार मुखड़न के रहल सुतार

भलहीं केहू के हो निकसत जान
टूटी ना केहू के लगले तान

निकसेला मुरछाइल मुँह से झाग
पानी का जगहा अब बरिसी आग

कहल करे भल केहू मचल अन्हेर
बूझे भिनसहरे के अब गधबेर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन-तइसन इहवाँ छूटल साथ
टूटल खूँटा पर ना पगहा-नाथ

होखे लागल सगरो आजु धसोर
आजु उबार परल बा सभ के भोर

नोचि रहल बा आपन सभे कपार
के बा बेड़ा अनकर खेवनिहार ?

डूबल चाहे सभ के साझ जहाज
दाजा-हिसिकी में बा परल समाज

उठे चलल सागर में ऊँच जुआर
तानी पाल, सम्हारी के पतवार ?

आजु लगा देबे के झटपट हाथ
बहके जनि ई नइया होइ अनाथ

बिना जोर के घसकत ना मँझधार
दुसमन आपन असकति बा बरिआर

देखि 'बेकहल' घर के हँसे गँवार
'गइल गाँव' अब नइयाँ धरी जवार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाह-महल में लागल चाहे आगि
निकसे ना जनला बिनु केहू भागि

ठाढ़ भइल बा अइसन आखु कुजोग
पइसि रहल बा भीतर कतने लोग

सभे बिसारल आपन असली राह
गफलत में बा पावत इहें पनाह

हँसल ठठा के पँजरा निरदय काल
भनसारी का ख़ोंता के रछपाल

बाहर से बा मूँदल सभे दुआर
सूझत नइखे भीतर के निकसार

पाँच पंच में गूँगी कछले चार
सोचत बाड़न एगो बनि अलचार

केहू नइखे अबहूँ करत पुकार
कहला बिनु ना होला जान उबार

का जाने के जानत कुछुओ भेव
बा हमनी में बइठल बनि 'सहदेव'!

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धह-धह गाँव-नगर बा लहरल जात
ठहरल तनिको सभका जहर जनात

केहू ना केहू के दुख पतिआत
अपने आगी-काठी जरे जमात

मुसुकी इहाँ महँग बा हँसी अमोल
भेंटत मँगनी में बा करकस बोल

आँखि मूँदि के डोलत चलत उतान
बा सभ केहू बोलत हलुक जबान

अपना में अब केहू कहाँ समात ?
लीले खातिर अनका के हहुआत

एक रहेले अलगे, अलगे सून
बनले दस ना रहि के गोरस नून

इहाँ रखाइल सज से बा अलगाव
भोर परल बा सभ के अब अपनाव
सभे मनेमन अपना बा
~~अपना मनहीं सभे भइल~~ सरदार
केहू का केहू से का दरकार ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताके दुनियाँ आन्हर मुँह का ओर
जाले सरपट धावल सुनि के सोर

माड़ा आँखिन में बा पसरल जात
हाड़ा काटल मुँह बा भरल लखात

मीठ बुझाइल सभ दिन रोग-बिकार
तींत कहाए लागल अब उपचार

पाकल आजु कहाला जे बा काँच
जाँच करेवाला ना मन के साँच

चमकल बा नकली के खूब बजार
पालिस करिखा के बा बड़ चटकार

भाव-भगति बा अनघा आजु लखार
जाले पूजल सगरे रँगल सिआर

आजु पुछालन ऊ, बा जिनिका लोल
बान्हल बा गरदन में जिनिका ढोल

सुनल कहाँ के दूबर मुहँ के बात ?
ठगवा लगवा भटकल जग बा जात

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ गइल बा बान्हल छानल पाँव
गरदन में पहिरावल बा गरदाँव

छोंपल आँखि, मुँदाइल दूनो कान
एके रंग जनाइल साँझि-बिहान

खूँटा पर कुछ भेंटल चारा-घास
छूटल धावल, टूटल मन के आस

दिन-दिन होला बन्हन ई बरिआर
होई ना बुझला अब कबो उबार

सुनि पावे केहू ना आजु सलाम
लागल बा गदहो के लाल लगाम

मधिम समय के तेवर मचल अन्हेर
तीतिर भइले नेवर ढोठ बटेर

अँइठल जाला बइठल-बइठल मोंछि
बाँड़ लगवले बाड़न बड़हन पोंछि

सींघि पोंछि ना रहले का अपमान ?
हूँफत--हाँफत नइखे अब इनसान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागत नइखे जब ले कसि के आँच
पाकत नइखे तब ले घइला काँच

सेवर रहि के जाई लगले फूटि
माटी के चोला ई जाई छूटि

गहँकी लीही बरतन ठोकि--बजाइ
हाथे-हाथे होखल करी सजाइ

जाई बहुत बढ़ावल तब ले मोल
खुलि ना सकी रँगाइल जब ले पोल

आँवाँ बा अबहीं ले बहुत धुँआँत
देखि अबेर इहाँ बा के अनसात ?

धुँआँ भला ई कइसे जाई भागि ?
बमकत नइखे जब ले लह-लह आगि ?

बुझला कतहूँ बान्हल गइल बतास
आन्हो के अब जागत नइखे तास

लहके का बेरा में आगि निझात
चमकल ना सोना ई रहल तँवात

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीतल नइखे नयनन के बरसात
कँवल करेजा लहलह आजु झुरात

मधुरी बोली के बा भइल दहार
बढ़ते जाला दिल में परल दरार

बहुते आजु गगन में उमड़ल मेघ
रसगर होई कब ले तरसल घेघ ?

गरज-तड़प के बहुते पसरल सोर
गूँग बनल ढरकेला ढर-ढर लोर

ओद भइल बा लवना ओद बतास
धह--धह धन्हकि रहल बा भींजल साँस

बाहर--बाहर से बा तन कठुआत
भीतर जोरल मन के अगिनि धुँआँत

नदी लबालब होले तोपि अरार
ढनढनात इरिखा के गहिड़ इनार

उठल करे सागर में भले जुआर
मीठ भइल ना अब ले जिनिगी खार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भँइसा एगो परिकल बड़ मरखाह
माँगि रहल बा हरिअर खेत पनाह

सोपह कइले लाला सजी सरेहि
दूलम होई गादा, साग, परेहि

पसरल मरखाही के सगरो सोर
गाँवाँ--गाँईं होखे चलल बटोर

बोलल केहू--"भँइसा खेदल जाउ"
टोकल केहू--"भँइसा छेदल जाउ"

गँइयाँ के जिनि रहलन मालिक साथ
भँइसा के पहिरावल चहलन नाथ

जोहल गइल सभा में के बा बीर
सींघि--पोंछि पकड़ो जे बनि रनधीर

सटकि रहल सभ केहू जब चुपचाप
बोलल एगो लइका अपने आप

"जानी ना रउआ सभ एकर हाल ?
भँइसा भागे देखत लूगा लाल"

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम लागीला फरके भइले पाँव
खल लोगन के मन में लेके नाँव

भल के करनी जे ना करसु इआद
भावे जिनिका बहुते कइल फसाद

खलई कइल करेला कुचरा लोग
जगिआ में डालेला बिकरा सोग

कुटनी - कुटना बइठल माँह - दुआर
जतरा काटे खातिर बनल सिआर

फटकत जाले मनगर अनकर दोस
गटकत जाले अनकर करनी ठोस

कइले हा ना सुबहित जे अँखिआन
लिहले हा आलोचक कतने जान

महटिआइ के मूँदे केहू कान
होखेला केहू के जब गुनगान

उनुका मन में अब ले रहल भरोस
बिन्हि के रखिहें दुनियाँ ऊ बेहोस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग बूझि पावे ना अटपट बात
बदले खातिर जुगवा बा अकुलात

अबहीं ले ई, बहुते बा तुतरात
नखहिस सुबहित बोले के अवकात

उठि – उठि, गिरि-गिरि जाला आल्हर-पाँव
सोचि - समुझि ना पावे दाहिन - बाँव

डेगाडेगी में बा लागल फेर
सरपट धावे के बा सवख अनेर

आजु डगर में लागे कसि - कसि ठेस
गरदा–धूरि बनावे बाउर भेस

केहू देखि कहेला -- "ह ऽ मतबार"
केहू हँसल करेला बूझि गँवार

पूछत नइखे केहू एकर हाल
सूझत नइखे अबहूँ एकर चाल

लागल बा रहिआ में भलहीं फेर
भूलत - भटकत पहुँची देर - सबेर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाईं त हम जाईं कहँवाँ भागि
लागि गइल बा हमरा भीतर आगि

बाहर से ई नइखे भले लखात
तोपल बा, भीतर जे रहल धुँआत

हम ना करि पवलीं हाँ अबले सोर
भइल इहाँ ना कबहूँ लोग - बटोर

थथमा के बा लागल गोड़े बान्ह
हुँकनिहार बा बइठल जा के आन्ह

परल सकेता में बा सचहूँ जान
होखल सुधि - बुधि लेले बहुत हरान

डोलत नइखे खुलि के तनो बतास
लउकत नइखे बेना निअरा पास

तड़पि - तड़पि के होला मनवाँ थोर
कूदि - फानि के निकसे चाहत लोर

जाला बढ़ल अगिनि के बहुते जोर
जरे -- बरे का सबखे मिलल अँजोर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीनि सकलि ना हमरा आँखी लागि
सूतल जग ना अब ले पावल जागि

पोसल जात जतन से इहाँ अन्हार
टकसल हमरा लग से ना भिनुसार

सपना का संपति पर लूझल लोग
लउकल ना अब लें कुछ हमरा जोग

किसिम -- किसिम के सउदा सभ का साथ
लागल ना कुछ सहता हमरा हाथ

माथ हमार रहल हा सदइं छूँछ
भरल हिया के नइखे कतहूँ पूछ

सहल गइल इहँवाँ का कहल अनेर
रहल जहाँ कहिए से मति के फेर

होखत बा जहँवाँ से भाग -- पराह
सूझि रहल बा हमरा तहँवें राह

बूझे ना जहुआइल जगवा बात
पूछी के हहुआइल कहँवाँ जात ?

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊपर से ना पावल केहू थाह
डूबि – डूबि के लागल अँटकर – आह

सोझ ठाढ़ हो के ना देखल रूप
माथ नवा के जे ना झाँकल कूप

सोचल करे जुगुतिआ बइठि अरार
पँवरी का ? जे कूदे ना मँझधार

धुँइआँ देखत जइहें सेही भागि
लागल नइखे जिनिका छान्हीं आगि

रहि जाई माटी के मूरति काँच
होखे दँवकत आँवाँ में अब जाँच

गड़हा में गिरला के रही अनेस
लागी ना रहिआ में जब ले ठेस

देत रही सभ केहू अनकर दोस
हो पाई ना जब ले आपन होस

कइले हा ना अजगर अब ले काम
रहले दाता मनगर राजा राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा गतरे -- गतरे ऐब हजार
होई कइसे हमरो आजु उबार

लागि गइल अछरँग बा इहाँ अपार
होई अब मुँह कइसे ई उजिआर

ताकल कबहूँ केहू ना भरि नैन
मुँह जोहत मन अब ले बा बेचैन

नाचल कइलीं भलहीं कतने नाच
झाँके अइले अब ले ना दस पाँच

गइलीं हम रो - रो के गावत गीत
ना सुनि पवले कबहूँ मन के मीत

हमरा ना लउकेला निअरा - दूरि
झोंकल बा अँखिआ में बुझला धूरि

जरते आइल जिअरा ई दिन - रात
नेह बिना ई दिअरा लहरल जात

अँगुरी आजु उठावे सउँसे गाँव
करिखा ई पावल ना काजर नाँव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection, Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुनियाँ हमरा ऊपर बा अनराज
अइलीं भलहीं तोपत एकर लाज

का जाने बा अब का एकर चाह
आइल हा सभदीना काटत राह

टकसल हमरा लग से भीर अपार
बनलीं हम अकसरुआ माँह बजार

केहू नइखे सूझत आपन आज
बतिया नइखे बूझत बहिर समाज

अनका कारन गारल गइल अँगूर
हमरा खातिर थूरल गइल धतूर

नेह लगावल पहिले बनि के हीत
पावल सउँसे खा के भेंटी तींत

रहले बहुत धरीं हम केकर नाँव ?
कमरी ओढ़ि रहल अब सउँसे गाँव

इहाँ बनल बा लँगटा बहुत लजार
भइलीं खाली हमहीं एक उघार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रही कहाते अब ना बेरा बाँव
रही धराते कब ले असगुन नाँव ?

टकसे चललि अमावस के ई राति
हलुक हो रहल जोन्हिन के अवकाति

निकसे लागल बन से चह – चह सोर
हदसे लागल घर में पइसल चोर

खँड़हर में ना करिहें उरुआ राज
मुरुगा बिनु होई ना अधिक अकाज

रहि पाई ना कतहूँ दुख के दाग
गूँजि उठी अब सगरे सुख के राग

होई गोर गगन के साँवर देहि
झाँवर ना रहि पाई आजु सरेहि

खिली सरग – पोखर में लाल गुलाब
झलकी अब धरती का मुँह पर आब

सगुन उठावे के बा होत अबेर
सुदिन मनावे में का लागल फेर ?

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदलल जाला इहँवाँ के सब ढंग,
आजु चिन्हाते नइखे आपन अंग

पहिला रोंआँ पर बा पाछिल रंग
परदा चितकाबर बा बहुते तंग

असली बात बिसारे लागल लोग
नकली नकल उतारे के बा रोग

आजु भइल बा अइसन- तइसन होड़
लउके सगरे छउकत बान्हल गोड़

नयनन पर बा चसमा चढ़ल रँगीन
खाली पेट जुगाली के सवखीन

जरल करे मन तन के देखि सिंगार
नाँव परल नवहन के अब 'बेक़ार'

बाँचे ना पाई अब भाँग - धतूर
नया रोसनी खातिर निसा जरूर

आवत बा सनकहवा इहँवाँ काल
छोड़े के अब होई मधुरी चाल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुख में दुख बा बहुते दुख में थोर
मोठ बुझाइल अब ले हमरा लोर

रहल कइलि -ऊपर ई आँखि हमेस
पाँव चिन्हाइल ना बे-लगले ठेस

निकसे लागल गर से रसगर भाव
दीहल जबे निछोही केहू घाव

जवरे रहल मुँदाइल दूनो कान
सधलीं अकसरुआ रहि हम सुर-तान

लागल जहिआ हमरा पँजरा भोर
पवलीं सहज रहे ना बनल अघोर

जाला लोग कहाँ दो बड़ अगरात
बिछिली पर सभ केहू बा भहरात

हँसि--हँसि कइल करनिआँ सँउसे गाँव
परल कपारे हमरे अजसी नाँव

बानीं भले कहावत हम बउराह
निभरम चलबि बनावत आपन राह

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उमड़े लागल अँखिया में दरिआव
बूड़ल चाहे मन के बोझल नाव

लूटल गइल डगर में बल -- बउसाव
छूटे चलल जगत से अब अपनाव

जनलीं ना हम सहता - महँगा भाव
राखत अइलीं सदईं सोझ सुभाव

ताकल कइल पसनहा कवनो दाव
लागल मन में हमरा ना लपटाव

फाँकत गइल नयनवाँ गरदा -- धूरि
बोलल कबो बचन ना मुँहवाँ तूरि

भरते अइलीं खलिहा हम भंडार
छूँछ कहाइल भलहीं हाथ हमार

आइल हमरा अबगे तनिका होस
भोर परल अगते के हुमचत जोस

उतरे लागल गँव से चढ़ल गुमान
सुतरीं सुदिन उबारी फरिछ बिहान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फाटे लागल मन के आजु कुहेस
नाचे लागल जग के तोपल भेस

होखे लागल परदा आजु उघार
छन-छन बदलत जाला ई संसार

काल्हु रहे जे नइखे उहँवाँ आजु
काल्हु रही ना जे बा इहँवाँ आजु

पाँव लेत अब नइखे कतो पड़ाव
होइ रहल जतरा के बहुत बढ़ाव

रोकि सकल के अवसर भागल जात ?
जे जवरे ना लागल बा पछतात

ताकल ना जुग कबहूँ पाछा घूमि
आगा अपना जाले दुनियाँ झूमि

पूछल केहू दोसर के ना हाल
सूझल सभ का आपन गोटी लाल

होला ना पाँती पर अनकर खोज
आजु भइल बा दूलम सबहर भोज

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा से ना होला भार सम्हार
बहुबाचक के हमरा घर में कार

निकसे सभ का मुँह से खालो सोर
होखे बे-मतलब के अब हुँड़होर

नइखे अनका कहला के अँखिआन
भरल गइल बा ढेला से सभ कान

जोरल बा बे-मन के तन के साथ
छटकि रहल ऊहो जे लागल हाथ

जिनिगी बहुते होते चललि जिआन
अकसर हम हो गइलीं आजु हरान

थाकल जाला बहुते बल-बउसाव
बदलल नइखे अब ले पहिल सुभाव

रोईला हम, केहू हँसे ठठाइ
जोहीं सोझा, जाला भागि पराइ

उलुटा राहे कहँवाँ धावल जात ?
कहला में अब नइखे बनल जमात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइलीं ना हम अब ले रस के बात
हम खटहा इमिली के रहलीं पात

जनलीं ना हम जामुनि भा अमरूध
भइलीं निबुआ गारल फाटल दूध

बनलीं बन में जटही के हम फूल
दिहलीं हाँ लोढ़त खा चभ् - से सूल

राहे -- बाटे रहलीं तातल बाल
डललीं हाँ तरवा में फोरा लाल

छवले रहलीं सगरो बनि के घाम
कइलीं बदरा अस ना छँहगर काम

हमरा जरिए में बा लागल घून
पसरल डाढ़िन के बा छाँह जबून

दुनियाँ ई मानीं ना तनिको साख
होखबि ना हम जरि के जब ले राख

अइलीं--गइलीं कहँवाँ ? कतने बार ?
कइलीं-धइलीं का ? के पूछनिहार ?

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम ना जनलीं होई अइसन हाल
चोटी के चढ़वइया ढूँढ़ो खाल

परबत लाँघे के जब रहे सलाह
जबुर जनाला बइठल बीचे राह

दुनियाँ में अब होला बहुत हँसार
घूमि गइल तरकुलवे चढ़त कपार

भोर परल भुइँयाँ के बात-बिचार
पोंछल जाला सबखे पहिल चिन्हार

पाँखि खोंसि के कउआ बनले मोर
साधु भेस में घूमे लगले चोर

बनला के बा बतिआ बनले जात
बोतल में बे जरि के पसरे पात

आँखि बान्हि के धावल जाला लोग
दवा डालि उपजावल जाला रोग

बिछिली पर के धाका बा बरिआर
भहरइहें अब खाला झाँकनिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागल हमरा आगा --- पाछा जाह
ढूँढ़े के अब होई ऊपर राह

घूमत अइलीं बहुते दाहिन -- बाँव
पहुँचल नइखीं अब ले कवनो ठाँव

चहलीं सबखे बदलल आपन नाँव
लागल मनसायन बड़ अनकर गाँव

साध रहे करि पइतीं तहें बसेर
लवटे में जहँवाँ से भइल अबेर

कहाँ - कहाँ हम अइलीं--- गइलीं धाइ
आपन घर जब हमरा भइल सराइ

ना हमार बा केहू पूछनिहार
जोहल कइलीं भलहीं लाख दुआर

डालल बा धरती पर सगरो जाल
पइसबि ना अबहीं हम जाइ पताल

अगल -- बगल के नइखे टकसत भार
होइ हलुक हम बनि के उठबि बयार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झँखत- झँखत भइलीं हाँ बहुत झवान
हाँफि- हाँफि गइलीं हाँ होइ हरान

होत चलल हिअरा के लहँगा - झारि
हँसि - हँसि गइल करेजा केहू फारि

लीहल केहू गँव से सरबस ढारि
रहल जान जिनिगी के बाजो हारि

हदसे काँपे लागल बल- बउसाव
निहँसि - निहँसि के बइठल जात हिआव

ढोअत आइलि माथे भारी सोच
जाँतल गइलि उमिरिआ बहुते लोच

भावल ना नयना के सवख - सिंगार
ताकल जे जनमे से जरत अँगार

अँदकल रहलि, भइलि ना कहिओ ढीठ
सहलसि डाँटलि जिभिआ खाटा - मीठ

आजु कहाला कतहूँ ई बरजोर
रहल काल्हु ले पेचे जे मुँहचोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिली मसखरी के ना अब संजोग
ताकल करे चउलिहा कतने लोग

हा - हा- ही - ही के बन भइल बजार
थपरी पीटे के अब गइल सुतार

बोली ना अब केहू हलुक जबान
परल सकेता में बा सभ के जान

ओड़ी कतना केहू आपन फाँड़
अँटकल बा दलकी में सँउसे डाँड़

दाजा- हिसिकी के अब सवख अनेर
असकति दीही मउअति जब अखड़ेर

गोड़ बजावे केहू धुने कपार
परल - परल ना टकसी कवनो कार

लागल नइखे जिनिका देहे घाम
रूखर होई तिनिको चोकन चाम

चटकी तारू, सूखी मुँह के आब
जनिहें बहुते महँगा परल जबाब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उठि - उठि गिरत रहल बा कब से पाँव
निअराइल ना अब ले आपन गाँव

लागल आहे पर बा अँटकर - थाह
लउकावल केहू ना असली राह

हमरा अब ले नइखे मिलल किनार
हम पँवरत अइलीं हाँ उलटा धार

चढ़ते गइलीं काटत कतने घार
भेंटल ना परबत पर कबो उतार

अइलीं ढोअत मनगर बड़हन बोझ
टेढ़े राह जनाइल हमरा सोझ

काँट - कूस के कइलीं ना अँखिआन
भइलीं भलहीं बहुते लहू - लुहान

हमरा बा जतरा से खाली काम
जनलीं हाँ ना अबहीं ले बिसराम

चलत अन्हारा धइलीं एके ध्यान
बइठल बा रतिआ का तरे बिहान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रही ओद ना पपनी, मन मरुआत
बनो काठ ना जिनिगी ई कठुआत

बहुत दिनन से पावत रहलि सजाइ
गइलि उमिरिआ जाँतलि अब गरमाइ

हहरे पाई अब ना अधिका साँस
डोलो खुलि के लगले बन्हल बतास

लुतुकी ई सगरो अब बान्हीं जोर
धुँआ उठे लागल जब चारू ओर

अब अन्हार के लउको ना लवलेस
नयनन का आगा ना रही कुहेस

सूझी सोझ डगरिआ अपने आप
लागी कबो नजरिआ पर ना झाँप

धावे लागी सरपट थथमल पाँव
टकसे लागो झटपट बेरा बाँव

सूतलि धरती सचहूँ उठी धधाइ
दीहो सुदिन-किरिनियाँ जब मुसुकाइ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नयनन में अब जागत नइखे छोह
नइखे मन में लागत कबहूँ मोह

झलकत नइखे कतहूँ तनिको नेह
चमकत काठ-पथल के भलहीं देह

निकसे लागल कतने नकलो नेम
जाला भागल असलो भाव-परेम

मुसुकी के अब नइखे लउकत रेख
सूखल जाला हदसे अबगर भेख

छूटि चलल बा गावे के अब बानि
बोलल भरि मुँह जाला बूझल हानि

उमड़े पावे ना अब दिल-दरिआव
ताकल जाला आपन - आपन दाव

आजु परल बा हितई - मितई भोर
जिनिगी बनते जाले निपट कठोर

चेतल जाला कतना मिलल दहेज
मयगर लउके अब ना कतो करेज

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूटि रहल बा सगरो से अपनाव
लागी अब ना अगते अइसन घाव

आपन रहत इहाँ ऊ बनलन आन
लात सहत छाती ई भइल पखान

हियरा में कहिओ ना उठी हिलोर
भरि-भरि आई नयना में ना लोर

झनकि उठे में अब ना लागी लाज
बनल पितरिआ थरिया आजु मिजाज

रसगर लागत नइखे तनिको बोल
फूटि गइल अनते के बाजत ढोल

गइलीं हम हुरपेटल, सहलीं डाँट
छरका के छरका हम खइलीं काँट

तूरे चलिलि कुमतिआ जोरल तार
भोथर भइल सुमतिआ के अब धार

हमरा नइखे लागत नोक-जबून
होखे लीपल-पोतल अब खरखून

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लग से केहू जाला चलते दूरि
हमरा अलगा होखे के ना लूरि

गइल सभे कहँवाँ दो गते पराइ
रहलीं हम अकसरुआ अब भकुकाइ

ठाढ़ रहल ना जाला अपने आप
ढोवे के केकर दो परल सराप

भोगत बा ई खँड़हर भुतहर भोग
ई घइला ह ऽ छुतिहर जाने लोग

बर-पीपर का करिहें आजु गुमान
फेंड़न में जब रेंड़े बा पुरधान

बने मकान सहर में आलीसान
भले उझंख भइल जा गाँव-गिरान

होला तहें पसन से अब बरसात
जहाँ उगे पावल हा ना खर्‌ह-पात

देखीं आई कब ले उनुका चेत
रहबि अगोरत तब ले हमहीं खेत

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखि-देखि दुरगति मन भइल झवान
जाई ना अधिका अब सहल जिआन

हमरा सचहूँ कहँवाँ मिली पनाह !
लागल बा ऊखी में हमरा राह

जब ले हम रहलीं हाँ बनल अचेत
चरते रहल गहुम के गदहा खेत

नोचे के चिरइँनि के छूटी बानि
सिअरो खातिर गड़बे करबि मचानि

देखबि कब ले सपना चादरि तानि ?
चललि बनावे घर में साहिल मानि

उरुआ चाहसु अँगना कइल बसेर
जरिहें देखि किरिनिआँ चढ़लि बँड़ेर

होखल हा जागे में हमरा देर
अब ना कबो समुझ के लागी फेर

चलि पाई ना चोरन के अब चाल
ऊँट लुकइहें ना अब जा के खाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा मिलल सुने के अइसन बोल
बिना खटाई के हो जइसे ओल

काटल कइल करेंजा कइसन बात
मुँह से हमरा नइखे आजु कहात

ढारत अइलीं छ ऽ- छ ऽ पाँतो लोर
बरल कइल धुरिए में केहू जोर

हम ना देबि करम के अपना दोस
हमरा लगे भरम के रहे भरोस

लउकल हमरा सोझा ना दरिआव
उतरल रहलीं ले के फूटल नाव

उठल कतो से आन्हीं, भइल अन्हार
उलटलि नइया, परलीं हम मँझधार

रहलन पँवरकिहा कछ- मछ- घरिआर
बनलन हमरा खातिर बहुत उदार

डूबि-डूबि के भइलीं कसहूँ पार
पीठि धरा के कब के कइल उबार ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसे ना हो पाई कबो उबार
लमहर जाल बिछवले बा बटमार

आपन ई ना बदली कबो सुभाव
खाली ना जाये दी आपन दाव

लासा एकर होला बहुते चोख
के चीन्हल हा अब ले एकर रोख ?

एकर हाथ भइल ना लहू-लुहान
हँसि-हँसि ई कतने के लिहलसि जान

ई हँसता ठग बइठे बीचे हाट
बन्हले बा ई सभ से बढ़ि के ठाट

बहुत कठिन बा एकर कइल चिन्हार
के ना सवखे मजगर भइल सिकार ?

चूसि-चूसि के सभ दिन अनकर खून
मूसि-मूसि के कइलसि बड़हन पून

भरम-धरम के सेसर मुँह में बोल
कइल जरूरी एकर परदा खोल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिनुसहरे ना कतहूँ भइल अन्हार
गँव से इहँवाँ जाला कइल अन्हार

रोकि बान्हि के राखल गइल अन्हार
इहँवाँ बा पहरा तर धइल अन्हार

बा अन्हार कतने के बहुत सहार
चलत अन्हारे में बा कतने कार

आँखि छोपि अँजुरो से बने अलोत
जोति अन्हारे में बा जगमग होत

बहिरपनो के बहुते बा अभिमान
अँइठि - अँइठि के मूँदे केहू कान

बा अन्हार के चाहत सेहो खैर
जे अँजोर से राखत आइल बैर

चकचवन्हीं में जाला जग जहुआइ
बूड़ी ऊ जे धइले बा हहुआइ

भीतर ढूँढ़ि रहल बा से निकसार
बाहर जेकर नइखे होत पसार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पावल के अनका के कतो सिखाइ ?
दोही इहँवाँ रहिये कबो चलाइ

बूझे ना कहला से केहू सोझ
ढोई अपने माथे सेहू बोझ

बँहिओं धइले जे ना डाले डेग
धाई सेहो लीही जब उदबेग

देखत रहलो पर ना देखे लोग
पोसल जात सबख से सगरो रोग

होला ना बे-मन के एक उपाइ
भोगत बा असकति के सभे सजाइ

बीतलि राति, भइल ना तबहूँ भोर
गइलि नींनि, बा सपना तबो कठोर

अह-जह में परि के ना कुछुओ होत
ठाढ़ रहित परगट जे भइल अलोत

सज से तबहीं घर-बन जाई जागि
लागी-तन-मन में जब तनिका आगि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेले गइल करेजा केहू काढ़ि
देले गइल नयन में उमड़त बाढ़ि

सूझत नइखे हालो कवनो राह
डूबे खातिर नदिया मिलिल अथाह

दुपहरिया में छवले रहल अन्हार
जाले लीलत सँझिया ई भिनुसार

पवलीं का हम सचहूँ इहँवाँ आइ ?
भइलीं अछइत सभ का अब असहाइ

सोहत नइखे तनिको रसगर तान
मोहत मन अब नइखे कतहूँ गान

गतर-गतर में लागल हमरा बान
सहते आइल साँसति दूबर जान

निकसत नइखे जाबल मुँह से 'ओह'
मनवाँ डूबे लागल परल चकोह

अकसरुआ के जिनिगी होले भार
भइलीं अनका हाथे हम अलचार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन रे ! डालु लहरिया घन्हकल भोर
बा सुकवार करेजा काल कठोर

पाकत जाये दे तें घइला काँच
चलु तें आजु बनावे सपना साँच

होई अबहीं बहुते कसि के जाँच
मनगर सहते जइहे लहकत आँच

रहिया में जनि बनिहे कबो अधीर
ताकी हँसि-हँसि दुनियाँ ई बे - पीर

दीहे कबो करम के जनि तें दोस
रखले हरदम रहिहे आपन होस

काटे के बा तोरे पसरल जाल
साटे के बा सगरे फाटल पाल

ठोके के बा तोरे अगिला ताल
रोके के बा अब ले बिगदल चाल

पाटी सोन - किरिनियाँ ऊँचा -- खाल
होई हरिअर धरती लह-लह लाल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदलत जात जबाना अपने आप
रहलन हा जिनि बबुआ बनलन बाप

चढ़लन हा जिनि कोरा, रहि के छोट
देले आजु निछोही घावे चोट

अगते अइसन नइखे अब संसार
ठोकसु कतनो बुढ़ऊ बइठि कपार

टोके केहू पर ना देले कान
कहला में रहले ना आजु जवान

चाल टेढ़ होई सभ लगले मात
राह धरे लागी जब जुग जहुआत

रहि ना पाई हरदम इहाँ अन्हार
अपने होई जगमग जोति लखार

छूटी असकति, जाई निनियों टूटि
चली किरिनियाँ ललकी जसहीं फूटि

अपने बही हुलसि के बन्हल बयार
कब ले रही निहँसते कली लजार ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार एकहूँ सँपरल ना समतूल
हम धमोइ के लोढ़ल चहलीं फूल

उगल आन बिरवा ना, दिहलीं रोइ
धमधूसर अस पसरे चलल धमोइ

हरिअर - हरिअर लउके सँउसे अंग
देखि बढ़ंती भइलीं सचहूँ दंग

पहिले लागल बहुते कोंअर डाँठ
भइल झँगाठ उमिरिया पा के टाँठ

पात - पात में झलके लागल काँट
बात - बात में निकसे जइसे डाँट

पीअर फूल उगवलसि कँटइल देहि
लागल चमके चम - चम सजी सरेहि

रंग - बिरंगी तितिली गइली लूझि
देखि परल मन - भवँरा हमरो जूझि

माला तेकर के कब सकल बनाइ ?
गइल फूल जे तूरत खा छितराइ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गदहा कब से ढोवत आइल भार
होई कहिया एकर भार - उतार !

लादल जवना देहे भारी बोझ
पीठि भइल ना कबहूँ तेकर सोझ

हाँकत केहू जाला बनि बे - पीर
हालो ना निअराला नदिया - तीर

तेकर आजु धराइल पसु के नाँव
निरखे ना जे पावल दाहिन -बाँव

बाघ निअन ना गदहा पवलसि मोंछि
सींघि उठल ना, भलहीं लटकल पोंछि

दाना - भूँसा के ना कवनो आस
नोचे अपना दाँते धाँगल घास

जाला तीनों टाँगे डालल छान
होला कबहूँ धुरिये में असनान

देला कुँहुँकत मन में रहि-रहि रोइ
छाड़ी अनकर अपना पीठी ढोइ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरल जोर, अँइठन में नइखे रेप
चोर चिन्हाइल तबहूँ नखहिस झेंप

नवल काँट कतनो, ना पाई टूटि
दाबल रोग भला का जाई छूटि !

ऊपर से बा ढाँपल गड़हा खाल
अबहूँ जाला तानल तोपल जाल

पंडित बाड़न कउआ, ज्ञानी गीध
बइठल तरकुल पर जे सेही सीध

बिलरू बाड़न अँइठत आपन मोंछि
कूकुर के सुहरावल जाला पोंछि

बुलबुल के बनलन हा बाझ इआर
गाँव अगोरल कइले इहाँ सिआर

आजु हीक भर पाड़ा पीअसु घीव
जरल करे बाछी के भलहीं जीव

गाँठ खोलि के मालिक बा अँघुआत
नोकर बनि के बानर बा बघुआत

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरल - झरल हो जाई सभ बरबाद
राख - पात बनि पाई ना जो खाद

भाग बाग के होई ना समतूल
डाढ़ी जब ले लागी ना फर-फूल

ठहरे जोग रही ना ई संसार
जब ले इहाँ बही ना रस के धार

साथ निबाही कइसे ऊ दिन - रात
बोलत नइखे अब जे भरि मुँह बात

जवरे रहि के भलहीं जनि हो भोज
पीठि - पीठि के रगरा रोजे - रोज

नवला बिनु ना लागल कुछुओ हाथ
कान्हा चढ़ि के अलगल जाला माथ

चले अमीरी अँखिया भलहीं चाल
परल करे तरवा में फोरा लाल

महँकि उठल बा पँजरा राखल घूर
जोहेला दुअरा से फेंकल दूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ लगा पावल ना केहू मोल
जिनिस देखि के भइले चुप बकलोल

गिनि - गिनि अँगुरी पर जिनि जनलन बीस
आजु बरेला कोटिन तिनिका खीस

लाँघे में चवकठ जे मानल लाज
भड़कत ना ऊ चढ़ि के उड़नजहाज

आँखि मूँदि जे राखत आइल सान
रहल आह पर मारत ऊ मैदान

जानसु 'अकिला फूआ' सभ के मूल
कहली हा जूती के जिनि कनफूल

'लाल बुझक्कड़' के बा बड़हन नाक
बन्हलन हा हरिना का गोड़े चाक

हँसता ठग दिहलन हा दाँत निपोरि
पी गइलन जिनि करनो अनकर घोरि

धावल कहिया, के, सुनि कहल हमार ?
पतिआइल के निभरम रहल हमार ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना चाहसु खुलि पावे अनकर कान
गावत अइले बहिरू आपन गान

पीटत जाले अब ले फटल ढोल
बान्हत जइहें कब ले उखड़ल बोल ?

अँखिया में केकर बा कइसन भाव
सुनला बिनु सहले ना दँवकत ताव

माथे बान्हल इनिका बड़का पाग
हाँकल करसु बइठि के ऊड़त काग

मरले सभ दिन ठोना रहि के दूरि
जनले ना कइसन हऽ धाँगल धूरि

मानेले अपना के बड़ फरछीन
जानेले अनका के निछछ मलीन

चहलीं हम गफलत में धरितीं हाथ
जनलीं अब निबही ना इनिकर साथ

नाचल करसु अपनहीं तूरसु तान
आइल अनबोलत के हमारो ध्यान

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनि पवले ना एको, कहलीं कोटि
बटुराइल बा उनुका काने खोंटि

बोलल सरबस सचहूँ भइल जिआन
खुलि पावल ना जब ले जबदल कान

अब ना आपन अधिका करबि अकाज
पहिले करसु कान के बहिर इलाज

हमरा आजु बुझाइल एगो बात
सुनल इहाँ बा अयगुन मानल जात

बेरथ होला तँहवाँ कइल उचार
नइखे जेंहवाँ तनिको भर पतिआर

बोली कवनों कतनो हो टनकार
कनपातर का पँजरा बा अलचार

अब ना गावत जाइबि सगरे धाइ
भरल सभा में बइठबि जाब लगाइ

बहुत भइल बे-कहले रोजे रोज
देखल जाई होई जहिया खोज

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागत चलल डगरिया में खरकोंच
मारल सभे करेजा ऊपर चोंच

होत रहल बा मनवाँ भलहीं थोर
भींजल नइखे अब ले पपनी - कोर

चढ़लीं हाँ कान्हा ना कहियो नाव
हरदम पँवरत रहलीं हाँ दरिआव

धइलीं भलहीं इनिकर - उनुकर साथ
नवल कतहुँओं ना ई अलगल माथ

आपुस में का पूछो केहू हाल
चिलवन लागल इहँवाँ, उहँवाँ जाल

चलनी अउर सूप में बा का भेद ?
पेट उघारल कतहूँ, कतहूँ छेद

आँखि मूँदि के कइसे पाईं ध्यान ?
कान खोलि के कब के लीहल ज्ञान ?

मनलें नइखीं बुझला अबहीं पोस
रखले बानीं इचिका आपन होस

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा जिनिगी में बा एगो भूखि
रोपबि अपना खेते हमहूँ ऊखि

गाड़बि माँह बधारी हम कल्हुआड़
झोंकबि धन्हकत चूल्हा, भागी जाड़

देखि - देखि चकरी के चकरी गूर
जइहें गाँवाँ - गाँईं के जरि कूर

लागल जिनिका - जिनिका करी पियास
भरिहें आपन लोटा चीखि मिठास

चाभी जेही चाही ऊखि अपार
घरहूँ खातिर जाई ले दू - चार

राखबि ना बरधन का मुँह पर जाब
चाटल करिहें चिउटो अनघा राब

लागल रही हमेसे तब दरगाह
बइठबि हम कल्हुआढ़ा बनि बदसाह

खूब सराही पहिले सँउसे गाँव
भले धराई पाछे नव गो नाँव

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहवावऽ हमरा से जनि कुछु आज
लागे लागी सुनि के बहुते लाज

दाजे जाला होखत अधिक अकाज
अँटकल बा रेती पर चढ़ल जहाज

थथमा लागि गइल बा हदसल लोग
भोगि रहल सभ केहू नाहक भोग

तारू से अँखिगर के सटल जबान
भागल जाला कउआ लेले कान

'हुंआँ' - 'हुंआँ' के होला अब ले सोर
उरुअन खातिर कब ले होई भोर ?

घेरेले पहरू के निनियाँ घोर
सेन्हीं पर गावेला बिरहा चोर

सितिआइल बा अबहीं दियासलाइ
लुतुको खातिर नइखे होत उपाइ

धन्हकि रहल बा हमरा भीतर आगि
खोरऽ जनि तूं तनिको, जइबऽ भागि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कउअन के बान्हींजा कसि के पाँखि
काढ़ल चाहेलेसऽ जोअत आँखि

जिया - जन्तु के नइखे कवनो ओज
गोधन के अब होला रोजे भोज

हेले चउकठ दिन में ढूँढ़ सियार
परिकल बा अँगना में चोर हुँड़ार

कूकुर तऽ कूकर हऽ इहाँ बिलारि
दूध - भात चाभेले माँह दुआरि

मूसन के जानीं जनि तनिको हेठ
खूँख बना दिहले सन बनि के मेठ

दिन - दुपहरिया चाहे सँझिया - भोर
मारल करे झपाटा उड़त चिल्होर

निहुरल - निहुरल लागल बथे पिठाँस
टेढ़ भइल बा गरदनि लागल फाँस

करि पइतीं तनिका भर जाँगर सोझ
लागित ना देरी तब पटकत बोझ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलत रही कहिया ले अइसन जाँच ?
सहत आ रहल धुँइयाँ घइला काँच

भलहीं गइलीं दुअरे हम दस-पाँच
रहलीं हाँ सभ का से सदईं साँच

पूछल चाहसु कतनो कठिन सवाल
देखसु, उनुका से का तोपल हाल ?

डालल हऽ उनुके ई लसहर जाल
छूटल धावल, बिसरी फरहर चाल

मारल कइल करसु ऊ कसि - कसि हाथ
जाइबि सहत नवअले हँसि - हँसि माथ

झोंकल करसु भले ऊ कतनो धूरि
फरिछ बने के हम ना सीखाब लूरि

गइलीं हाँ रहिया से फेंकत काँट
अइलीं हाँ सभ का से पावत डाँट
थउसे चलल भरोसा, घटल हिआव
उमड़ी केहू के कब दिल - दरिआव !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागल बा रहिया में भीर अपार
चकचवन्हीं अँखिया में भरे अन्हार

आजु बन्हाइलि मतिया, थथमल पाँव
निअराई ना अइसे आपन गाँव

कब के सुनि पावल हा केकर बात ?
कहला पर ना केहू अब पतिआत

जवर रहत रहलो पर बा अलगाव
सूझि रहल सभ के बस आपन दाव

इहाँ मचल बा सचहूँ अजबे खेल
तन साटल पर नइखे मन के मेल

झूठ बुझाला अनकर, आपन साँच
सभे सराहत आइल आपन नाच

भइल करे बस हमरे सगरो मान
अपने खातिर कतने तूरसु तान
चाहत नइखीं अपना लगे झमेल
धरी साथ ना केहू चलबि अकेल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहलन अगते कइसन - कइसन लोग
बिसरत नइखे बीतल दिन के सोग

रहल कबो मेला के ठकचल राह
अब कतहूँ ना लउके ऊ दरगाह

कइलीं ना जाने हम का अपराध
काटि रहल बा जेहल पोसल साध

कइसे कहीं, कहे में लागे लाज
सुनवइया ना पँजरा हमारा आज

अपना गरजे अइबे कइल समाज
हमरा बेरा सभका भइल अकाज

आजु बनल अनचीन्हल आपन गाँव
बा पुछात हमरो से 'का हऽ नाँव ?'

गइलीं चलत इहाँ से कतनो दूरि
धइले रहीं जतन से माथे धूरि
पाछिल बात परल बा इहँवाँ भोर
पोंछे के बा अपने आपन लोर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(६२)

बा बुझात अब हमरो एगो बात
हुलसी ना हमरा से कबो जमात

देत रहीं हम भलहीं आपन जान
लोग करी ना कबहूँ कुछ अँखिआन

देखि - देखि के हमरा भइल भरोस
देत रही दुनियाँ ई हमरे दोस

काटि रहल बा हमरे बोअल लोग
किस्मत में बा हमरा भोगल भोग

जागलहा घूरो के कहियो भाग
उचरल हा न हमरा अँगना काग

लागत नइखे अब ले छावल पार
उजरल बा कहिये से छान्हि हमार

तनिका भर हम रहितीं बनल कठोर
होइत गर के फँसरी ना बरजोर

भरि मुँह निकसत नइखे कतहूँ बोल
सुतला मुँह के चूमा के का मोल ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बूझल करे भले ई जग बउराह
छोड़बि ना हम कबहूँ आपन राह

अनकर जूता होला हमरा छोट
मेहीं चाल उहाँ बा इहँवाँ मोट

पगरी नइखे धइले चानि उघार
जरे जेठ में तरवा, बथे कपार

काटत जाये के बा जंगल-झाड़
लाँघत आवे के बा ठाढ़ पहाड़

ताकबि ना जब टोकी कवनो राड़
काँपबि ना हम होई कतनो जाड़

गरजे लागी बदरी जब घनघोर
थाहबि तब हम नदिया के हिलकोर

लउकत नइखन कतहूँ कवनो हीत
बनितन जिनि अकसरुआ मन के मीत

नइखीं चलल पहिरि के हम जंजीर
रोकी के हमरा के होंत फकीर ?

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतहूँ होला बरखा कतहूँ धूप
धरे गगनवाँ एके दु गो रूप

देखल जाला कब से आवत - जात
लागल सगरे पाछा दिन का रात

लउके केहू साँवर केहू गोर
सँझिया लागे झाँवर लहलह भोर

ऊजर बरफ कहाला करिया मेह
दूनो हऽ पानी के आपन देह

बालू के जनि बूझे केहू छोट
मेंही बनत गइल बा पथले मोट

नीचे पाँव रहेला ऊपर माथ
बीचे बा दूनों का हियरा - हाथ

होखेला अपना से जब अलगाव
अनका लगे लखाला बड़ अपनाव

धरती एके, बनले कतने देस
मानुस एके, बदले भलहीं भेस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम धराइल पाछा, आगा बात
बिना सोरि के जाला पसरल पात

बात - बात में झगरा महँग किनात
काम - धाम के सउदा कहाँ बिकात ?

खाल - ऊँच बतिआवे के बा चाल
बात भइल बा बेसो चलता माल

बात सुनल जाला बन कइके कान
बाते में केहू अब लेला जान

बतकहियो में बाता - बाती होत
लात रहेला सोझा, बात अलोत

चाहल हा सभ केहू जीतल बात
भोर परल ना अब ले बोतल बात

कइसन - कइसन आई आगा बात
नइखे हमरा मुँह से आजु कहात

बात बनावल जे ना बूझल बात
कामे आई के, ना कतो लखात

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू कतहूँ देखल करे अन्हार
लग से हमरा लउकत बा भिनुसार

चढ़लीं सचहूँ हम ना कबहूँ ताड़
नइखीं फनले अब ले ऊँच पहाड़

आहल चहलीं तनिका भर आकास
छूटल ना भुँइयाँ के कहियो बास

चहलीं कम ना होखित हमरो पाँखि
दुनियाँ भर में धाइत निभरम आँखि

जइतीं उड़ि के देखत कतने देस
पइतीं चीन्हें कइसन केकर भेस

सुनितीं किसिम - किसिम के चहकत बोल
जिनिस जुटइतीं अनते से अनमोल

पाँखि कहाँ ? हम पवलीं पइगर पाँव
लँघलीं ना सपनो में आपन ठाँव

आँखि मूँदि के अचके मिलल अँजोर
घूमि रहलि ई धरती, झलको भोर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखीं कब ले होला फरिछ बिहान
रूप - रंग के होई अब पहचान

बुझला अबहीं लागी तनिका देर
छवले आइल अब ले अजब अन्हेर

लागल बा सनमति के इहँवाँ फेर
बिलमल अगहरिया के कहँवाँ टेर ?

थथमल पछलगुअन के आजु जमात
भरमल नयन अन्हारा बा जहुआत

छूटी असकति, टूटी अचके नीनि
लीही सुख सपना के जगरम छीनि

बइठे केहू पाई ना चुपचाप
होई धावालागी अपने आप

निकसे खातिर आगा होई होड़
फरहर तब हो जाई थथमल गोड़

रहि पाई ना कतहूँ कवनो घार
लोही लागत घसकी मइल अन्हार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोर कहाला नवहर साँझि पुरान
नीनि कहाले मउअति जगरम - जान

काल्हु रहल जे तोपल उघरल आज
छने - छने बा पसरत दिन के राज

रंग गुलाबी सगरे छ्वले जात
सोना का पानो में धूरि नहात

ऊपर बा हीरा के भइल अँजोर
मोती अस धरतो के चमके लोर

झलकि रहल बा जुग के बदलत भेस
चलल बतास सुनावे नया सनेस

चहके लागलि चिरईं फरकलि पाँखि
हुलसे लागलि जिनिगी बिहँसलि आँखि

चलि पाई ना अधिका छल के चाल
दूरि भगावल जाई जग से काल

चमक - दमक के होई अब न टान
बनल चान धरती के जब मटिखान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहँसल आजु अकासे नवका भोर
हुलसलि नयन - पुतरिया देखि अँजोर

घसके लागलि बादरि अब घनघोर
भइल गुलाबी झाँवर पुरुबी छोर

छा जाई छन भर में ललका रंग
सोना अइसन दमकी तमहा अंग

उठी जागि माटी के सूतल भाग
सगुन उचारी अँगना - अँगना काग

गमक लुटाई कोंढ़ी, भँवरा राग
अगराई फूलन के निहँसल बाग

रोक रहे ना पाई, छूटी फाँस
वेघ जँताइल लीही खुलिके साँस

ठहरी ना अब तन के, मन के घार
होखे लागल ठहरे - ठहर उचार

जागे लागल सउँसे सूतल टोल
सभ केहू जगरम के जानल मोल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइलन हा जिनि अबले हँसत ठठाइ
गइलन टोकल सुनि के बहुत चिहाइ

धइलन रतिया में जिनि अनकर पाँखि
दिन में फूटे लागलि तिनिकर आँखि

सोर रहे बड़ करिहन दुनियाँ पाक
मूँदे सेहू लगलन आपन नाक

पँजरा गइला पर ऊ लिहलन बीन्हि
दिहलन आपन एगो करिया चीन्हि

चाभत सदईं अइलन छाल्ही मोट
माल बटोरत गइलन सभ दिन गोट

भरि ना पावल अब ले उनुकर पेट
कटलन पीठी चढ़ि के अनकर चेट

चाटत ई रहलन हा तेकर पाँव
मुरदा आजु बनल बा जेकर नाँव

छपकल बाड़न अबहीं बाघ-हुँड़ार
कूकुर भूँकल बुझला देखि सिआर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सँउपल जाई तिनिको हाथे काम
कइलन हाँ सभदोना जिनि आराम

झाँवर हो जाई अब उनुको चाम
जिनिका देहे लागल नइखे घाम

गइलन चढ़ल अकासे उड़िके दूरि
होई अब ओढ़े के उनुको धूरि

जे बा कतहूँ घसकल गँव से भागि
देखे तनिका ऊ अब दँवकत आगि

नइख अब ले काँपल जिनिकर हाड़
सेहू जानसु कइसन होला जाड़

चूअल जिनका माथे ना बरसात
पँवरसु अबकी ऊहो बाढ़ि फफात

जरी, जुड़ाई, डूबी, उबरी गाँव
ऊँच सरग के पूजी अब ना पाँव

देव लोक अब खोले मूँदल कान
मानो अब करकर के स्वागत - गान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(७१)

साँच कही कइसे जे बोले झूठ
दान करी ऊ जे ना खोले मूठ ?

निअरा रहि जे भावे ना से दूरि
धन जे कामे आवे ना ऊ धूरि

नेवर हो जे लागल सभ के पाँव
ऊँच कहाई तेकर नवता नाँव

होई आगा ऊहे मालिक - माथ
जोरत आइल हा जे अब ले हाथ

तवने गुन हऽ नीमन तवने भाव
चमके सोना अइसन सहि जे ताव

बाड़न अइसन कम ना, लिलिहन ढेर
मनलन जिनि सँझिया के भइल सबेर

उरुआ के बनलन हा बाझ इआर
कहसु बाघ के मामा घाँख सिआर

ऊ का हँसी ? फुलवले बा जे गाल
ऊ हो फँसी, बिछवले बा जे जाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदलत जाले दुनियाँ रोजे - रोज
पाइ - पाइ के होखे लागल खोज

गते - गते बा घसकल जात अन्हार
सोन - किरिनि के झलकल हाथ हजार

कहँवाँ ले बा पसरत गइल अकास
लागल होखे एकर आजु तलास

का अब केहू मन में करी गुमान !
धाँगल गइलन गोड़े चमकत चान

कतना केहू होखी अब सवखीन !
ढिबरी आगा जोन्हीं भइल मलीन

खेलल गइल अकासे बहुते गेन
काछल अब सागर के जांई फेन

दूरि - दूरि ले हाँकल जाई काल
जाई भलहीं फाँकल तातल बाल

धरती का भीतर बा कम पइसार
ढूँढ़ल जात गगन में अब निकसार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चोर - चुहाड़न के मन होखी थोर
छाता से ना तोपल जाई भोर

लागी ना अधिका अब मुँह पर जाब
नोचल जाई साटल आजु नकाब

लागल फाटे पह, ना रही अन्हार
जागल घर, अब होखी चोर चिन्हार

आड़ा में ना होखल करी सिकार
चिरई के ना चाँपल करी बिलार

जोंक लोग के छूटी बानि जबून
आजु धराई उनुका मुँह पर नून

चूसत अइले अब ले खटमल खून
काठ चबइहें कब ले सँगरा - घून ?

मच्छर के बा इहँवें बनल बसेर
माछी बाड़ी बहुते भइल दिलेर

करिहें मकरा - मकरी बिस्तर गोल
झारल जाई बिहने घर के झोल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ लखा ना होला अजगुत कार
आजु आदमी के बा ऊँच लिलार

कइ दे कर बिनु, सुनि ले जे बिनु कान
रहे कहावत अब ले से भगवान

साँस - साँस में जेकर बा पइसार
माया पसरल तेकर ई संसार

धइलन किसिम - किसिम के सेहो रूप
मछरी से मानुस के देहि अनूप

कइले बा बिनु जनले जे बिसवास
होला छन में ऊहे लोग निरास

उतरसु हमरा अँगना में घनस्याम
धावेलन बन - बन में सीता - राम

मनगर लागी दुनियाँ ई मनहूस
टूटल धनुहा फिनु से जा के रूस

सोरह कला कहावत अइलन चान
'लूना'[1] - सोरह' हऽ नर के निरमान

१. सन् १९६९ में रूस के चन्द्रमा पर उतारल यान .

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइल आदमो अब ले सत्यानास
लागल 'राबट' पर बा हमरा आस

आजु परेले पाछिल बतिया भोर
देखत आगा अजगुत होत अँजोर

बदलल जाला बरम्हा के संसार
आजु आदमी होला सिरिजनहार

ठोंकि - ठाकि कठपुतला गढ़लसि एक
लागल करे - धरे जे कार अनेक

आवा - जाही एकर बा बे - रोक
ई धाँगत जाई अब कतने लोक

अबगे उतरल हा ई चढ़ि के चान
खनले आइल नोंहें पथल - चटान
'रॉबट'[1] के बा असली ई पहचान
छोड़ी ना ई हमनी अस ईमान

देखत अनकर मुँह ई दी मुसुकाइ
सुनि के अनकर दुख ना हँसी ठठाइ

●

1. चन्द्रमा पर भेजल रूस के लूना-१६ में के यंत्र-मानव.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लउकल एके जोन्ही सेहू दूरि
दिअरो बारे के ना आ आवे लूरि

नयनन का आगा बा भइल अन्हार
भइल बनवलसि कूहा अब भिनुसार

डोलि रहल बा मनगर कतो बतास
का जाने आई कब निअरा पास !

चरचा जेकर होला कानोकान
होखित हाली इहँवों ऊ अँखिआन

देखि - देखि के आइल कतने लोग
कहे - सुने के भेंटल ना संजोग

कइलीं हाँ कहिये से हम गुनगान
अनदेखल के हमरा बा पहचान

मोरबि हम ना कबहूँ आपन पाँव
धइ दे भलहीं केहू बाउर नाँव

तोपल बा जे होखो कबो डिठार
रोक रहे ना पाई, खुली दुआर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीभि चुपाले जहँवाँ बोले आँखि
गूँग बहिर ना कतहूँ होले आँखि

दाह - दवँक से भागल नइखे आँखि
राति - राति भर लागल नइखे आँखि

अनका कारन सदई बरिसलि आँखि
अपना खातिर नइखे पसिजलि आँखि

पीअर - लाल कहाइलि ना ई आँखि
भलहीं कतो सहाइलि ना ई आँखि

हमरा नइखे मांगे आवत आँखि
बानीं ठहरे - ठहरे पावत आँखि

आँखि - आँखि का पाछा धवलसि आँखि
आँखि - आँखि के परिचे पवलसि आँखि

आँखि मुँदाई कइसे रहते आँखि !
जाई कब ले अइसे सहते आँखि ?

अन्हरा आगा अब ना रोई आँखि
दादा अधिका अब ना खोई आँखि

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोरत अइलीं सभ का जवरे प्रीति
रोअल कइलीं हम गा-गा के गीति

अनका ख़ातिर हाज़िर रहल परान
अपना बेरा हाजत परल जबान
हितई में भइलीं हाँ बड़ हलकान
मितई में बिसरवलीं सँचल गुमान

कहियो अकसर निकसल ना ई नाँव
अनते रहिके छूटल आपन गाँव

चहलीं ना करनी के कइल सहेज
दीहल कइलीं हाथे काढ़ि करेज

रखलीं ना केहू से कबो दुराव
ढूँढ़त सभ दिन रहलीं हम अपनाव

रहल आजु ना हमरा आँखी लोर
बनल साधु सभ केहू हमहीं चोर

तनिका भर बनि जा मन! अउर कड़ेर
ओरी के पानी अब चढ़े बँड़ेर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साध रहे ना छूटित आपन गाँव
धँगितीं ना अनते हम कवनो ठाँव

जनम - भूँइ के सेवल करितीं पाँव
'बबुआ' - 'भइया' होइत हमरो नाँव

होखे पावल कहँवाँ मन के चाह
आ के बहरा बनलीं बड़ बउराह

आजु चिन्हाते नइखे आपन हाथ
बात पहिलका अब ना सोचे माथ

टूटि गइल सभ नाता, छूटल साथ
पगहा लागल पाछा, आगा नाथ

चाभुक के बा पीठी कतने दाग
मुँह में आजु भरल बा अनघा झाग

भइल जनावर के बा साँचो हाल
आजु निहारल जा ना आपन चाल

पिठिअवले बा सहरी ई संसार
बिसरि गइल गँइयाँ के रहनि हमार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोहल छोड़बि अब से अनकर दोस
आजु सम्हारबि तनिका आपन होस

सचहूँ हम बनलीं हाँ बड़ बउराह
लोग कहेला हमरा के सनकाह

धाँगल ना हम चहलीं धाँगल राह
डूबल बा जग जहँवाँ पवलीं थाह

लागल भलहीं पँयड़ा में खरकोंच
फूल - काँट में मनले नइखीं दोच

होत रहल जिनिगी में तन रकतार
भइल उमिरिया के ना मन सुकवार

देखत मातर केहू हँसल ठठाइ
छाँटल केहू मुसुकी नजरि बँचाइ

हमरा माथे लागल कइल पखान
नइखीं अब ले भागल सहि के बान

अब ना ओढ़बि अधिका देहे धूरि
सीखबि फरिछ बने के हमहूँ लूरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ जोरि के नावल कइलीं माथ
पीठी पर ना पावल कइलीं हाथ

सभे चलावल हाली - हाली हाथ
रहलीं हम सभ दीना खाली हाथ

पसरल अब ले कतहूँ ना ई हाथ
बन्हलसि मूठी कबहूँ ना ई हाथ

आइल लेंबे कब के हाथे - हाथ ?
दीहल कब के हमरा माथे हाथ !

लागल बिना नोनि के सपने हाथ
दिहलीं काढ़ि करेजा अपने हाथ

अनकर बँहियाँ भलहीं धइलसि हाथ
अपना खातिर कुछ ना कइलसि हाथ

होखी ना ई जिनिगी अब बे - हाथ
रहो एक मुँह दू गो जब ले हाथ

आँखि मूँदि के अलगल ना ई हाथ
हाथ मिलल ना, रूखर बा ई हाथ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा बा कहिये से ई बिसवास
लागल बा अबहूँ ले पुरहर आस
ढूँढ़ीला जिनिका के सगरे रोज
करिहें तिनि कहियो ले हमरो खोज

हमरा सवखे धावे के बा कार
बइठल बाड़न कतने पावनिहार

होला सभ का जवरे ना मन - मेल
भावल हा इचिको ना कबो झमेल

दोहीं आजु भाग के भलहीं दोस
छोड़बि ना उबरे के कबो भरोस

अनका कारन ढोईं सँउपल भार
नइखे हमरा बहँगी पर अधिकार

अनते आजु लगाईं का हम जोर ?
खींचि रहल बा केहू अपना ओर

आजु भले ना होखे पावत सोर
काल्हु लखाई इहँवों लोग - बटोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु सराहत बानीं आपन भाग
उचरे लागल हमरो छान्हीं काग

अब जनि बनु रे मनवाँ! तनिको थोर
उतरी लगले अपनो अँगना भोर

नयना! बनु जनि अधिका अउर उदास
देखु अकासे धावे चलल हुलास

बतिया पतिआई अब बहिरो कान
रतिया जाले भागल बूझि बिहान

मुरुछइली सभ तरई होइ हरान
मुँह तोपे अब चलले चमकत चान

पवन सुनावे लागल नया सनेस
उधिआइलि अब बादरि हटी कुहेस

लागि रहलि जिनिगी में अबकी आगि
निखरी सोना, निकसो राँगा भागि

टकसि रहल करिखहवा जम्हु के काल
पसरे चललि किरिनियाँ नवकी लाल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबहूँ मुँह ना लगलीं, लगलीं पाँव
चढ़ि के माथा पर ना धँगलीं पाँव

अंग - अंग के होला कइ गो नाँव
सरधा बा हम पूजीं जइ गो पाँव

धावत आइल नगरे - नगरे पाँव
भार देहि के ढोवे सगरे पाँव

पावे आँखि तमासा, ठोकर पाँव
मालिक बनली चिरुकी, नोकर पाँव

रँउदे कँटइल धरती रकतल पाँव
पावे पगरी माथा, लहरे पाँव

नीमन अगल - बगल ना राखल पाँव
चाहीं आगा - पाछा लागल पाँव

केहू बा केहू के छानत पाँव
केहू बा केहू के फानत पाँव

धाँगल कादो - कनई जतने पाँव
रहल पबीतर मुँह से ततने पाँव

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू जानत नइखे रहनि हमार
होला अपना मुँह से ना परचार

हम रहलीं भा गइलीं नइखे खोज
हमरा खातिर भोजो में बा ओज

निकसल ना मुँह - देखल कबहूँ बोल
चाहत नइखीं बान्हल आन्हर गोल

आइल जेहो, कइलीं तेकर काज
भागल हमरा लग से रहत समाज

देखत अइलीं हम के कँहवाँ जात
के कहँवाँ परगट बा, कहाँ लुकात

खेलत बा के कइसन - कइसन खेल
पानी में बा फेटल इहँवाँ तेल

करनी बहुते रूखर, चीकन बात
तर बा भूँसा, ऊपर लीपल जात

बाँचल ना नयनन में तनिको नेह
काठ करेजा के बा कंचन देह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परदा में राखल बा उमिरि अपार
परत - परत परदा ई होत उघार

परदा परल नजरिया पर बा झीन
बाँचल जात अछरिया मोट - महीन

झलके झल - झल परदा तर के रूप
राखल जइसे धुँइयाँ तर हो धूप

घसके अपना मन से, बा हठुआर
भागत नइखे भक - से भरल अन्हार

गते - गते ई रतियो जाई भागि
कले – कले पूरुब में सुनुगी आगि

बइठल बा परदा तर आगिल हाल
खींचि रहल बा सर – सर परदा काल

ढूँढ़े अँखिया परदा, परदा कान
परदे से आइल बा जग में जान

ऊपर से लउकेला गरदा – धूरि
अँकुरेला दर परदा जीवन – मूरि

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसगर बाजे लागल चरकल बाँस
मयकर लागे लागल गर के फाँस

हमरा मुँह से निकसल करित हुआँस
बँसुरी में ना फूँकित केहू साँस

लागल तहिया दुनियाँ बहुत उदास
भागल केहू जहिया लेइ हुलास

केहू कबो कहाइल आपन खास
तूरल सेहू जोरल कब के आस

जनलीं, मनलीं देखत दिन के फेर
साँचो इहँवाँ आइल भइल अनेर

जाये ना हम पवलीं कतहूँ भागि
लागल रहे डगर में सगरो आगि

झाँके चललीं भीतर बइठि अलोत
झलकल बालू में तब जल के सोत

आँटल ना अँजुरी में कहियो लोर
होई अब गवला के हमरो सोर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागल कहँवाँ अनते दुनियाँ जात !
सागर सुख के पँजरे बा लहरात

भावेला अनते के बाजत ढोल
बूझे ना निअरा के केहू बोल

कहल करेला कब से सभ संसार
रहल करे दियना का तरे अन्हार

पसरल रहे कतो जे बनि के घास
लवटवलसि लछुमन के सेही साँस

अइसन - तइसन लागे इहाँ लहास
पेट भरे जब हियरा परे उपास

आजु भइल सधुआइल मनवाँ चोर
कहँवाँ ना छिछिआइल छछनत लोर ?

उमड़ि रहल बा हियरा में जे भाव
हमरा नइखे बान्हें के बउसाव

एक गाँव से हमरा बा दरकार
धाँगल चाहबि हम ना राह हजार

•

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवलीं हाँ हम अइसन आँगछ - लूरि
राह - बाट में फाँकत रहलीं धूरि

अब ले इहाँ बहारत अइलीं धूरि
कतहूँ गँव से टारत गइलीं धूरि

पोंछल कइलीं सगरे हाथे धूरि
अनघा धइलीं अपना माथे धूरि

हमरा पीठी नइखे लागल धूरि
चढ़ल लिलारे झलहीं धाँगल धूरि

सरस बनिति ई धरती ना बिनु धूरि
लउकित बोरो - बदरी ना बिनु धूरि

साँझि - भोर के लाली देले धूरि
धइ कुहेस के रूपो लेले धूरि

साँस - साँस हो चाहे बहत बतास
धूरि भरल बा सँउसे भूँइ - अकास

बा सँउसे जहान में छवले धूरि
बा इनसान चान में पवले धूरि

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा गर में नइखे रसगर राग
सूखल जाला मन के हरिअर बाग

लागल • आगि, जरल हा लहलह भाग
धुँइयाँ के बा सँउसे देहे दाग

ताकल हा केहू ना हमरा ओर
गिरल पहाड़ तबो ना कइलीं सोर

अब का होई जिनिगी अधिक जबून
भरल गइल फोरा में हमरा नून

लहकल छावल मड़ई के खर्‌ह - पात
काटबि कुँहुँकि - कुँहुँकि के हम बरसात

फेंकल ना पटुका के केहू छोर
सूखल कइल अपनहीं ढरकल लोर

हमरा मुँह से कुछ ना आजु कहात
अइलीं सहत करेजा ऊपर लात

ना होईला सुनि के हम बेहोस
देला लोग करम के हमरे दोस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा कुछ पावे के नइखे बानि
पवला के जनलीं हाँ अब ले हानि

दूनो हाथे लूटल हा संसार
हमरा बेरा होखल खूँख भँड़ार

रस पीये खातिर बा सभकर पूछ
रहल आजु ले हमरे अँजुरी छूँछ

लागल बा दरसन के कतहूँ भीर
ताकल एने कहियो ना बे – पीर

निकसे केहू, हम ना रोकबि राह
लागल अइला - गइला के बा थाह

कान्हें कबो चढ़ावल केहू नाँहि
हमरा ओर बढ़ावल के कब बाँहि ?

आवे में निनिऑं का लागल लाज
सपना बे - मँगले बा भेंटल आज

तनिको नइखे मन में भरल गरूर
हमरा पाले बा जे देबि जरूर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा से ना अब ले भइल हमार
कइलों हम सभदीना अनकर कार

लोग कहे जे, ऊ ना रहनि हमार
बूझे ना हमरा के ई संसार

छूटि गइल कहँवाँ दो आपन गाँव
अनते रहि बिसरवलीं आपन नाँव

हमरा नइखे अपना से कुछ काम
अँठिली ई तिनिके हऽ जिनिकर आम

आपन हम ना जनलीं कुछ अवकात
आन्हीं में उधिअइलीं बनि के पात

धूरि बनल मानीला बड़हन भाग
माथे हम ना चढ़लीं बनि के बाग

साँस बसवले बा ई बहुत बतास
बान्हीं जाँतल आन्ही कबो हहास

आपन हम ना जनलीं कुछुओ हाल
बान्हल गोड़े रहुए अनकर चाल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होइ रहल बा 'पइसा - पइसा' टेर
पइसे के लागल बा इहँवाँ फेर

पइसा - पइसा जोरल जात अनेर
छूटे पइसे कारन तन अखड़ेर

पइसा के बा अतना भरल गुमान
पइसा ना चीन्हेला आपन - आन

पइसा के चाहीं बस पइसा - राज
लागल ना पइसा का कहिओ लाज

पइसा से ना सँपरल नीमन कार
पइसा ठहरल सचहूँ बड़ बटमार

पइसा काटत आइल अनकर पेट
पइसा दाबत आइल दूबर घेंट

जिनिकर पइसा में बा बसल परान
तिनिका पँजरा सुख के कहाँ अड़ान!

कइलीं ना हम पइसा खातिर तूल
पवलीं एगो पइसा कोनबि फूल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धइ - बटोरि के बहुते जग अगरात
रसरी का भक जइसे सरप धरात

तोपल जाला परदा से उतपात
बरत दिया छान्हीं का तरे रखात

मांति - मांति के पीए केहू खून
चाटि - चाटि के जोए केहू नून

छाती भइल अबर के धसि के खाल
अँखिया लाल जबर के फूलल गाल

नरमी पर बा बहुते भइल कड़ेर
बकरी पर जे बनि के बइठल सेर

मंगल के सजले बा सेही साज
पवले बा जंगल के जे ई राज

काटल गइल बिरिछ के हरिअर डाँड़
हो गइली उपजाऊ परती टाँड़

फरके अब चाहेला बान्हल पोल
फाटी धरती होई जब भुँइडोल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टकसत नइखे बोझा बा हठुआर
मन के बन्हन तन से बा बरिआर

जोर लगवलन कतने बोली बोलि
पावल हा अब ले ना केहू खोलि

इहाँ लगवलन कतने आ के टेर
छूटल ना निनियाँ के अब ले फेर

का अनका पर उझिली केहू छोह
तूरे ना जानल जे आपन मोह

'सपना के ई दुनियाँ' कहसु अनेक
जगरम के जानल हा केहू एक

एक - एक जवरा के होला दूइ
बून - बून बहरा के जाला चूइ

पावल थाह कहाँ ? के ? राह अपार
मूअत - जीअत जाई ई संसार

मुरुछा घटे, इहाँ से हटे बिहाग
भैरव राग जगावे 'उठऽ बिराग'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब चिहाइ के आइल देखे लोग
नदी – नाव के भेंटल बा संजोग

भागल • जात रहे जे देखि अरार
जे चाहल पँवरल ना, गहल किनार

हदसी अब सेहू ना देखि जुआर
कठवति में पावल जे गंगा-धार

भइल भरोसा सभ के लागल आस
पार - घाट पहुँचे के भइल हुलास

नइखे जिनिका पँवरे के बउसाव
नाव निहारत तिनिको बढ़ल हियाव

साधन बिना रहल हा कुँहुँकत साध
सागर बिना भरल ना गगरा आध

साधन के करु मनवाँ ! आजु उपाइ
साँसति बिसरवले जो गाइ - बजाइ

छोड़त जइहे अलगे आपन लीक
केहू कही डगरिया तोरो नीक

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूछीं जन हमरा से ओकर नाँव
बाटे जेकर मुदई सँउसे गाँव

खेलि सकल हा ना जे तोपल खेल
रखले बा सभका से जे अनमेल

जे अब ले ना सीखल कवनो दाव
होखी कइसे ओकर जान - बँचाव ?

चाल चलल हा जे ना धइके ओट
आइल हा सभदीना सहते चोट

तेकर कठिन कहाला राखल टेक
अपना जनम - करम के जे बा एक

सूतल सभे जहाँ बा जागल एक
चतुरन का बीचे बा पागल एक
राह छोड़ि के नइखे भागल एक
टकसल ना, अबहूँ बा लागल एक

बा भरोस, ना जाई कतहूँ एक
लेइ सोन, दस दीही सचहूँ एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुरुगा बा उरुआ का तरे गिनात
लहठीं बा सोना का दरे किनात

बिसरल मंतर गारी घोंकल जात
चंदन बा भनसारी झोंकल जात

कुँइयाँ माँह दुआरी रहल खनाइ
जोमे आन्हर गिरिहें खुद भहराइ

भूँकि रहल जे चढ़ि के अपना घूर
लागल धूरि उड़ावे सबखे चूर

बाँटत बानर बंडा बा उपदेस
'पवली पोंछि कटाके नर के भेस'

चलले हा जिनि देहे मलत भभूत
कातसु अनका चरखें सेहू सूत

बिना लगवले दम ना होला ध्यान
बिना चढ़वले 'रम' ना होला ज्ञान

धुँआ उड़वले से ही धावल जात
आन्हीं का अगते बा जे उधिआत

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरल करे दऽ तनिका अबहीं खून
झरल करी बदरी से कबहीं बून

तवल करे दऽ पँयड़ा में के बाल
नवल करी पँइयाँ में कहियो काल

धसल करऽ जनि दलकी में तूं जाइ
फँसल करऽ जनि बनवाँ में अझुराइ

चढ़ल करे दऽ पानो खातिर रोस
बढ़ल करे दऽ आन्हीं वाला जोस

बनल करे दऽ खोंखड़ खँड़हर ढूह
गनल करऽ जनि होखत कतना हूह

कइल करऽ तूं बेरा के अँखिआन
धइल करऽ जनि मनवाँ ! अनते ध्यान

रचल करे दऽ मकड़ा के जनि जाल
चलल करे दऽ ठगवा के जनि चाल

कहल करऽ तूं हरदम परदा – खोल
रहल करऽ तूं निभरम बोलत बोल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतो परल बा माटी, कतहूँ रेत
गइल बाढ़ि अब होई फरहर खेत

आजु भूँइ के जागो सूतल भाग
आजु माथ पर जाई बान्हल पाग

आजु पाँक - पानी के छूटी दाग
कंठ - कंठ से निकसी नवका राग

हर - हेंगा के होई आजु सुतार
खनकी खुरपी, मारी छेव कुदार

धरती दीही लागत हर मुसुकाइ
उतरी आसिन, कातिक चढ़ी धधाइ

होखल करी पसन से कूस - उजार
खाल - ऊँच ना जानी परिहथ - फार

मानल जाई भदरा के ना भेव
डालल जाई सज से अन के नेंव

लउकी ना अब कतहूँ परल दरार
लँगटा ना अगहन में रही बधार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंध ओढ़ि के बिचरल करे बयार
डगर - डगर में गमकल हर - सिंगार

चमकल चान, चाननी झलकलि गोर
कइले बा आसिन में सरग अँजोर

राति - राति भर कोईं खिलि - खिलि जात
ताल - तलइया बहुते बा अगरात

भूअर भतुआ अस बा भइल अकास
बोआ लेखा जोन्हीं के परकास

गइल गगन से पोंछल गरदा - धूरि
मइल रहे के छोड़त बा जग लूरि

घर - आँगन बा सज से लीपल जात
राह - बाट बा बहुते फरिछ जनात

महल - अटारी ईंटा के अगरात
चरनि - चउतरा माटी के मुसुकात

रतिया बिआ अमावस के हठुआर
दिअरी बारल जाई, जरी अन्हार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहलहात बा हरिअर - हरिअर धान
परी जान में घर - घर अबकी जान

आजु अँगोरल जाला सज से खेत
केहू सूतल नइखे होइ अचेत

रोकल गइल बढ़त खा बाढ़ि - दहार
खेदल गइल जतन से निछछ सुखार

आसमान से बरिसे भले अँगार
बा मँगात धरती से जल के धार

एक पाख में होई बालि लखार
डेढ़ मास में विउरा मिली दुधार

दूइ मास में जाई भरि खरिहान
लागी मनगर जहँवाँ साँझि - बिहान

जाड़ कँपावे पाई ना अब हाड़
नवका चाउर लीही बहुते आड़

रहो रजाई, कमरा, दोहरि, धूस
अबकी होई पूसो ना मनहूस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहरल जिया जुड़ावत नइखे चान
निहँसल मुँह में आवत नइखे गान

रसगर सुर पर धावत नइखे कान
आजु ओठ पर भावत ना मुसकान

रूप - रंग ऊहे बा सगरे आज
भइल घिनावन भलहीं नखरा - नाज

चमक - दमक में नइखे कसर बुझात
ताकि - झाँकि ना मनवाँ बा अगरात

फर - फूलन के जस के तस रस – गंध
सूँघे – चीखे के बा सभ परबंध

बा तसबीर पहिलके सभ रंगीन
तबियत फुरमाइस के बा गमगीन

बिसरल नइखे कवनो सवख – सिंगार
कठुआइल बा अबहीं सहि के ठार

रंग माँग के होई फिनु टहकार
नया भोर मुसुकाई जब दिलदार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होई डगर - डगर में नजरि निहाल
पहिरे दऽ गोरी के चुनरी लाल

करी सँवरिया सोरह जबे सिंगार
जरी नजरिया देखत लाल अँगार

चली गुजरिया तिरिछे - तिरिछे चाल
निअराये कतनन के लागी काल

बूझी माने - मतलब अपना जोग
धाई आहे पर अब कतने लोग

कतने चलिहन मनवाँ में मुसुकात
गिरिहन कतने गड़हा में भहरात

कतने लोटत जइहन, खइहन मात
कतने हँसी उड़इहन, पइहन लात

होई पछलगुअन के कम ना भीर
पायल - धुनि सुनि के ना बनी अधीर ?

कतनो आजु फुलावे केहू गाल
नाचे लागी सेहू सुनि के ताल

❁

पँखुरी भइल हजार/१५०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फाटी लगले बदरी, निकसी धूप
लागी चमचम चमके तोपल रूप

कइले बा अगते से ऊ अँखिआन
धइले आँखि मूँदि के बा जे ध्यान

तिनिका नइखे अबहूँ होत चिन्हार
जोहत नइखन कबहूँ जिनि भिनुसार

मूँदत आइल हा जे अब ले कान
करि पावल ना सुर के से पहचान

राखेलन तिनि अपना धुन पर नाज
भावत नइखे जिनिका सवतुक साज

गुनगर आजु कहावे ऊ भरपूर
नीमन नइखे एको जेकर लूर

जिनिकर रहनि अन्हारा के मसहूर
होई गरब अँजोरा तिनिकर चूर

राखत जिनि अइलन हा चीकन चाम
लागी अबकी तिनिको रूखर घाम

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सँउपल जाला हमरा हाथे आगि
अँउघल जाला हमरा माथे आगि

डालल हमरा तरवा तर बा आगि
जोरल जात हियरवा पर बा आगि

लउके लागल घर में, बन में आगि
धन्हके लागल तन में, मन में आगि

झलके लागल अन में, धन में आगि
सुनुगेला जन - जन में, गन में आगि

भरल गगन में, जल में, थल में आगि
बुधि में, बल में, कल में, छल में आगि

बन्हले जाला थाला लहकल आगि
दसो - दिसा में जाला बहकल आगि

धइले बानीं आपन पोसल आगि
हम ना जानीं अनकर खोंसल आगि
पीअत जाइबि, हम ना उगिलबि आगि
ओढ़बि भलहीं, पर ना उझिलबि आगि

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू जनि अब पूछो हाल हमार
अपने आगी भइलीं हम जरिछार

मँगलीं ना हम सोना के संसार
लागल हमरा भीती नोनी खार

रोपे ना हम पवलीं भलहीं फूल
हमरा धरती में से निकसल सूल

बरिसल हमरा परबत पर अंगार
नदिया में ना झलकल हमरा धार

देखत अइलीं सपनो में सुनसान
हमरा खातिर अपनो होखल आन

अछइत आँखि रहीला बनि के सूर
मुँह खोले ना दिहले कबहूँ कूर

बीतल जात अकारथ अब दिन - रात
जाये के बा हारत सभ अवकात

दमरो दूलम, के तब चाहो लाख ?
हीरा बे जरले अब होला राख

❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निअरा तें बुधिया का तनिका आउ
हियरा ! आपन जनि तें हँसी कराउ

तोर धराइल जाला बाउर नाँव
सेसर आजु कहाला मुँहगर पाँव

तानेला तोरे पर सभे कमान
छूटेला तोरे पर बिखिगर बान

सभे करेला तोरे ऊपर वार
भइले एगो तेंहीं इहाँ सिकार

रहते अइले अब ले तें बउराह
मनले ना एको तें नीक सलाह

जनले ना तें कहिओ आपन - आन
झूठ - साँच कइले ना तें अँखिआन

उड़ले ऊँच अकासे परि मँझधार
आजु उतरि भुँइयाँ के देखु बिचार

अब जनि आँखि मूँदि के अधिका धाउ
उछहल जोस होस का सँगे लगाउ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धाइबि आहे पर ना हम हहुआइ
ताकबि एने - ओने ना जहुआइ
भूँके केहू कतनो अब खखुआइ
जाइबि अपना राहे गाइ - बजाइ

उधिआइबि ना अधिका बनि के धूरि
आजु रहबि ना अपना लग से दूरि

धइलीं हाँ हम बेरथ अनकर हाथ
छोड़बि ना अब से हम आपन साथ

सहते अइलीं अब ले बहुते धाह
भेंटल नइखे कहिओ कतो पनाह

अब टाँगबि गरदनि में हमहूँ ढोल
थपरी पीटे कतनो नाचत टोल

बोलबि हमहूँ तनिका टनके बोल
बान्हबि हमहूँ पेचे आपन गोल

पहुँचबि तहाँ अपनहीं छोड़बि दाज
हमरा बिना जहाँ बा होत अकाज

❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बइठल रहलीं घर में कतने रोज
आजु भइल बा बहरा हमरो खोज

हमरा रहे काल्हु ले ना बिसवास
होखी एहू खरूह के कतो तलास

उपजल कवनो बन में पतलो - झूर
रहलन जहाँ सँघतिया बाँस - बबूर

हरिअर रहे गतर के बड़ सुकवार
बनल सूखि दू - धारी जे तरुआर

भइल कबो ना भोथर एकर धार
होखल ठेकत मातर तन रकतार

सहल कइल किसमत के अइसन वार
गइल कटाते जरि से बारंबार

सहत - सहत बरखा के अनघा बान
खरूह के छावल मड़ई भइल झवान

सुनुगल नइखे अब ले आँचि धुँआत
लुतुकी खातिर खरूह बा खोजल जात

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा रहते रोई ना संसार
अधिका अब ना होई लोर लखार

घरे - घरे जा के हम गाइबि गीत
दुख के आजु बनाइबि मन के मीत

कुँहुँकत कंठ बनल बा नुनहँड़ खार
पाई हमरा हाथे मधु के धार

मुँह जोहबि हम सभ के करबि निहोर
आजु करो जनि केहू मन के थोर

मुरछा हटी जगत के भागी रोग
लागी ना जागे में नव गो जोग

होई चकवा - चकई का बिसवास
जब हम बिहसत लेके चलबि अकास

जाइबि जगरमु
हमहीं बाँटह ~~करबि~~ ~~परसों~~ - गान
जागि उठी सुनि पंछिन के सुर - तान

राग कढ़ावल होई तब सुकलान
नाचि उठी जिनिगी में जब मुसुकान

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथे हँसुआ, कान्हे धरबि कुदार
काटबि - कोड़बि कतने जंगल - झार

बन्हलीं डाँड़, निकसलीं खने पहाड़
मटिगर अब हो जइहें अँकड़ल टाँड़
ऊँच खाभि के पाटत जाइबि खाल
मोरबि नदिओ के हम उलुटा चाल

कबो उठे जनि पावे ऊजर रेहि
ओढ़बि घूरो सबखे सँउसे देहि

देबि हाथ से अपना पथलो थूरि
लाते मींसि बनाइबि ढेला धूरि

फेंकत उठा - उठा के जाइबि काँट
पइहें परिकल साँढ़ो कसि के डाँट

धइले बानीं बीया बीछि - बराइ
देबि किआरी सजसे तनी पटाइ

थथमो केहू, हम ना मानबि दाब
बोअबि गहुम, पँजरवे रोपि गुलाब

•

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राखत अइलीं हाँ हम अनकर रोख
बा अपना करनी पर अतने तोख

अँदकल रहलीं जनि दे केहू दोस
हुकुम बजावत बनलीं हम बेहोस

बे बूझत जे केहू कइल सजाइ
माथ चढ़वलीं, हँसि के भाग मनाइ

अनचीन्हल जो देला केहू बोलि
दीला भरल करेजा आपन खोलि

आइल ना मालिस के हमरा लूरि
राह - बाट के कइलीं फाँकल धूरि

कहत - सुनत कुछ हमहूँ गइलीं सीखि
भेंटल नइखे कतहूँ अब ले भीखि

होत रहे ना इचिको जेकर पूछ
हाथ रहे ना दिहलीं तेकर छूँछ

दिहलीं उनुका माथे पाग चढ़ाइ
हाथे इनिको झुझुना देबि धराइ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बतिआईंजा नीमन - नीमन बात
पतिआईंजा टकसल बेरा जात

निसइल अस रहला में लागे लाज
अँघुअइला से बहुते भइल अकाज

आपन अब छोड़ींजा पहिला चाल
चेतींजा आगा के तनिका हाल

ताकि रहल बा हमनी के संसार
उठि के आजु करींजा मुँह उजिआर

आजु भइल बा सगरे एके सोर
अजमावल पाहुँच के जाला जोर

बइठींजा जनि खेले खातिर तास
जागे आगे धावे के अब तास

अब जनि लहरे पावे अधिक करेज
हँसि के आजु करींजा आँचि अँगेज

छूटे अब भुँइयाँ के गीध - मिसान
चान छुअइले, बदले अब इनसान

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत दिनन पर अबकी उमड़ल मेघ
जिया जुड़ाइल, लहकी ना अब देह
पाई आजु गगन से धरती नेह
जाई रस में सँउसे भोंजि सरेह

निकसी अब कन - कन में पइसलि आगि
जाई जरनि भूँइ के लगले भागि

नाचि उठी गरजल सुनि बन में मोर
चमकी साँवर घन सँग बिजुरी गोर

बरिसी सँझिली बेरा ले घनघोर
करिहें झींगुर - बेंगो निकहन सोर
चानो - सूरुज लीहें तनीं पड़ाव
झलकी ना जोन्हिनि के कतो जमाव

भरे चलल खेतन में परल दरार
रोकि सकी ना केहू काल्हु दहार
सोन्ह हो गइल माटी झरते बून
सूखी ना नदिओ के खीसी खून

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाउ, गाउ रे मनवाँ ! तेंहूँ गाउ
कुँहुँकि - कुँहुँकि जनि जिनिगी जहर बनाउ

केहू जनि सुनि पावे कुँहुँकल तोर
पोंछे के बा तोरे आपन लोर

बनु जनि निहँसलि अँखिया ! अधिका थोर
टकसे दे ई राति, लखाई भोर

झँखु जनि दियना, धुनु जनि इहाँ कपार
जरत - बरत कइले रहु भार सम्हार

का जाने केकर का होई हाल
ऊँच कहेला केहू, केहू खाल

बूझल करु तें मनवाँ ! बतिया सोझ
ढोवे के बा तोरा लादल बोझ

आपन तनी सम्हरले चलु तें पाँव
धरे भले ई दुनियाँ बाउर नाँव

गूँजत जाये दे अब अइसन तान
जागि उठे सुनि सूतल बहिर बिहान

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीअबि जब ले तब ले गाइबि गीत
गीत बिना ई जिनिगी लागे तींत

हारि - हारि के अइलीं जोहत जीत
पवलीं सुबहित हम ना मन के मीत

कलपि - कलपि के ढारबि ना हम लोर
होई हँसला के अब हमरो सोर

बइठबि ना हम पाछा जाइ अलोत
अधिक लजाइबि अब ना सोझा होत

हुमचि रहल कहिये से एक बिचार
राखल बा जे मन में करीं डिठार

आइल निरिखे - परिखे वाला लोग
मिलि पाई फिनु कहँवाँ ई संजोग

चढ़ल - बढ़ल बा अइसन आजु हिआव
चाहे गर से उमड़ल दिल दरिआव

अनका अइसन मूँदबि हम ना आँखि
फरिछ गगन में खोलबि मन के पाँखि

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम ना आजु सरग में जोहबि फूल
हमरा बा धरती के काँट कबूल

खोलल गइल गगन के भलहीं राह
नइखे पावत भुँइयाँ लोग पनाह

भकुआले बड़ बहिरू सुनि के सोर
अकुलाले अब अन्हरू जानि अँजोर

कब ले रही उमिरिया तन के नान्ह ?
आजु खुलल चाहेला मन के बान्ह

हाथ धइल चाहे ना अनकर पीठि
ऊजुग माथ सम्हारे आपन दीठि

अँटकी ना अब कतहूँ फरहर पाँव
दूर रही कहिया ले आपन गाँव ?

भूलल - बिसरल मिलिहें भरि अँकवार
बिहँसत बोलल करिहें चतुर - गँवार

बा बिसवास चरनियाँ करी कमाल
झाँके चली किरिनियाँ कबो पताल

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होत गइल सभ सपना अब बेहाथ
लागल जागल जिनिगी अपना हाथ

उचटि गइलि जे ऊ ना लागी नोनि
लिहलसि सुख सपना के जगरम छीनि

देखे लगलीं तनिका अँखिया फारि
लागल जइसे गइलीं सरबस हारि
हमरा मन में बाँचल एगो भूखि
गइलि आसरा के जब नदिया सूखि

होइ रहल बा हाली - हाली चेत
सूझल बाढ़ि उतरते खाली रेत

आजु करमवाँ लउकल आपन बाँव
नइखे कबो धराइल नीमन नाँव

मतलब रहल काम से कइलीं काम
अइलीं अब ले सहते बरखा - घाम

सोझ करे ना पवलीं तनिको देहि
आइल रहीं अगोरे सबो सरेहि

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलि बहुत भिनुसहरे आपन आँखि
पंछी पिंजड़ा के बा पीटत पाँखि

ठकचल, रहे नयन में अनघा लोर
खुलि पावल ना अब ले बान्हल ठोर

उठल आजु हियरा में बहुते दाह
ढूँढ़त पोसल पंछी बन के राह

दाना - पानी के ना जागत चाह
घर में ना चिरईं के होत निबाह

कतनो देउ करम के केहू दोस
मानो अधिक भरम के अब जनि पोस

कामे आई कबहूँ तेकर जोस
मरुआइल रहिके जे राखल होस

टूटल नइखे, अबहूँ मन के आस
तूरी कबहूँ पिंजड़ा बन्हल बतास

लागल चाहेला अब कसि के आगि
काटि रहल जे जेहल निकसी भागि

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग कहेला हमरा के बड़ ढीठ
दीठि बँड़ेरी पर बा भुँइयाँ पीठ

केहू कहे भइल बा भूत सवार
केहू कहे कछवले बा हठुआर

नइखे चाहत बूझल केहू बात
अइलीं काहें खातिर हम कठुआत

चढ़ितीं ऊँचा, ताकल करितीं नीच
रहितीं परल रजाई - तोसक बीच

अधनंगा हम बानीं भइल उघार
हमरा खातिर नइखे धइल पुआर

हम का जानीं कइसन होत मिठास
नून चाटि दिहलीं जब तूरि उपास

पवलीं ना हम कन भर के अवकाति
जइसे - तइसे काटत गइलीं राति

भावल नइखे अब ले बिसइल भोग
लोग कहेला हमरा लागल रोग

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाड़ - माँस मँहकी ई रोंआँ - चाम
आई ना जिनिगी जो अनका काम

गम - गम गमकी सेही बनिके फूल
धइल करी अँकवारी में जे सूल

कटुअइनी माटी के जाई भागि
जोरे चली किरिनियाँ जसहीं आगि

बनते जाले दुनियाँ नीरस खेह
झलके ना नयनन में तनी सनेह

भुँइयाँ निकसलि थाहे जब आकास
आजु साँस में जनि हो बिखइल बास

चमक - गमक के जवरे हो परबंध
रहल करे सोना का सँगे सुगंध

तब ले हाथ उठवले चले मसाल
पुरुबी छितिज बने ना जब ले लाल

खोंता छोड़सु अबहूँ तोंताराम
धाँगे के बा जिनिका कतने धाम

•

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम जोहत बानीं ऊ 'संघाराम'
पाई जहँवाँ जाके जग बिसराम

आइल बा जे अब ले धाँगत धूरि
मंजिल ओकर नइखे अधिका दूरि

हमरा एकर पुरहर बा बिसवास
मेटी कतहूँ पहुँचत भूखि - पियास

रही सवारथ के ना तहँवाँ साध
परमारथ पसरल बा जहाँ अगाध

बान्हल नइखे जहँवाँ ऊँच डँड़ार
हितई - मितई के बा खुलल भँड़ार

छावल 'राम' - मड़इया बगिया माँह
जिया जुड़ाई तहँवें पाके छाँह

गाड़ल गइल जहाँ बा करघा एक
गमकेला तुलसी के गाँछ अनेक

अपना हाथे कुँइयाँ करबि उड़ाह
गागरि में सागर के भरबि उछाह

•

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झाँके एने - ओने केहू खूब
ताके के सोझा बा केकर हूब ?

एने बा गरमाइल बहुते ताव
ओने बा कठुआइल जात हिआव

पानी बा इहँवाँ के खउलत आगि
छूअत मातर गलिहें, चलिहें भागि

बरफ बनेला कतहूँ, इहाँ अँगार
तरहत्थो पर होला आगि सम्हार

कान्हा पर बा लादल बड़हन बोझ
राखत अइलीं हरदम गरदनि सोझ

कइलीं कहिया केकर हम परवाह ?
रहलीं धइले आपन एगो राह

अइलीं निअरा चाहे गइलीं दूरि
धइलीं अपना माथे धाँगल धूरि

निकसेले एही से बोलो टाँठ
नइखी बन्हले मन में कवनो गाँठ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेम - जोग - जप - तप सभ पूजा - ध्यान
गुन गरोह बटुराइल विद्या - ज्ञान

धरम - करम के अब ले जे अभिमान
कहल - सुनल जतना बा नया - पुरान

चाहत होखे सरबस आजु जिआन
उबरल ना जो संकट परल परान

जागु - जागु रे मनवाँ ! करु अँखिआन
खोलु आजु आपन तें जबदल कान

छोड़ु दाज अनकर तें अपने आउ
भइल भोर जगरम के सोर सुनाउ

थोर - ढेर जे सँपरे जोर लगाउ
नया पराती गा के गाँव जगाउ

तन के नारायन के बास बनाउ
आपन जनि तें नर के नाँव हँसाउ

भटका खोलु, भरम के भूत भगाउ
चकचवन्हीं में जुग के राह बताउ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राह - बाट में पवलीं हम बे - तूल
मुरुझाइल गेना के एगो फूल

कइलीं हाथे ले के तनिका जाँच
सुबहाँ गइल, 'हजारा' पवलीं साँच

ताखा पर चिरइँन के चोंच बँचाइ
बीआ खातिर धइलीं फूल सुखाइ

साध आजु बा रोपबि बान्हि कतार
चम - चम - चम चमकाइबि काल्हु दुआर

फूल पसनगर बेली के मसहूर
रहे गुलाबो गरबे अपना चूर

बने एक जूरा के, गर के हार
दोसर करे अँगुरिओ के रकतार

ना उन्हनीं अस गमको गेना चोख
रंग - रूप ना उन्हनीं अइसन रोख

उगो, बढ़ी अपने से रहि सरदार
लहसी जेकर पतई बनि उपचार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अचरज का ? उपजल जो गरब - गरूर
रोपल इहाँ गइल बा भाँग - धतूर

लागसु दुपहरिया के सूरुज धीम
भरले बा अँखिया में कुहा अफीम

गइल लाज - डर, लागल लकम खराब
डोले मनवाँ मातल सूँघि सराब

लउके सवखीनन के तहाँ जमात
चीलम जहँवाँ गाँजा के गरमात

के अब सुनी ? कही के नीमन बात ?
बाउर कथा पहिलका आजु जनात

डगर - डगर में बिछिली पर भहरात
भइल फतिंगा नयना अब मँड़रात

रूप - रंग के चमकल करे बजार
उघरल जाला तोपल अंग लजार

दूर बनल बा निअरा, निअरा दूर
होखल नाँव नकलची के मसहूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल इहाँ मुँहदेखल अब ले कार
होला नरम मरम पर कसि के वार

मानल. गइल इहाँ ना कुछु परहेज
धाँगल गइल लात से कँवल करेज

राखत आइल सरधा जे भरपूर
तेकर साध भइल हा चकनाचूर

कबो दहिन ना भइले, रहले बाँव
पूजल जाला मन में जिनिकर पाँव

जोरल जिनिका जवरे गइल सनेह
कइले झोंकल नयनन में ऊ खेह

रहल गइल हा जिनिका बिनु बेहाल
अँखिया बाड़े कइले सेहू लाल

कब ले धोखा खइहें भाव - परेम ?
काम बनावत जइहें नकली नेम ?

नइखे अब हमरा से इहाँ ठटात
'एकलव्य' के अँगुठा जहाँ कटात

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागेला मँगरो के हमरा ओह
हाड़े पइसल घूनो पर बा छोह

लागल हमरा घर में बा दिअकाँड़ि
फोरल कइले चिउटा मूँदल भाँड़ि

पवलीं ना माड़ो हम, पिअलन घीव
धइ के गर अँठई अस कतने जीव

डाँड़ल जाईला हम बे - अपराध
अपनवले बा अइसन रोग असाध

जाई ना जिउ के ई जरनि निठाह
पाई ना जब ले ई नेक निगाह

चाहीला अब लागित अँटकर - आह
बूड़ीं - उतराईं हम पाइ अथाह

मनितीं ना रहिया में कवनो रोक
गनितीं ना जतरा में कवनो टोक

ना रहितीं सभदीना बनल लजार
कूकुर भूँकल करिते भले हजार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंगु पाँव पर पवलीं आँखि उड़ाँक
परल आजु बा हियरा भीतर फाँक

सीति - धाम हम सहलीं, रहलीं साँच
आजु कहाईं भलहीं चनकल काँच

सूखल कबो नयन में नइखे नेह
भले भरल हो हमरा मुँह पर खेह

परल पेच में बानीं धुनत कपार
तन से भइलीं मन से ना अलचार

कइलीं केकर ना हम बहुत निहोर ?
ताकल कहँवाँ के कब हमरा ओर ?

जाईं अब हम कइसे अनते ठाँव ?
बान्हल बा खूँटा से इहँवाँ पाँव

कहत - कहत हम पवलीं अतने जानि
नइखे परल सुने के अबहीं बानि

अपना गरजे गइलीं गावत गीत
कान अरज पर काहें केहू दीत ?

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु 'त्रिलोचन'[१] जी के लागीं पाँव
सुनलीं जिनिका मुँह से 'बरवै' नाँव

गइलीं 'पाँड़े' जी[२] का सँगे 'सिवान'
'सारन - सम्मेलन' के रहे जुटान

घरी - पहर के भेंटल जे संजोग
गइलीं करते ओकर हम उपयोग

सुनले रहीं अगतहूँ कुछ अनमोल
एने - ओने कतहूँ जिनिकर बोल

देखि 'अमोला'[३] मनलीं आपन भाग
पवलीं उनुकर 'अवधी' में अनुराग

धावन 'भोजपुरी' के ई अलचार
होला कबहूँ - कबहूँ बड़ हठुआर

एकर सवख रहेला – 'सुनितीं नीक'
नकल उतारे के ना छोड़े हीक

जोरत जइसे - तइसे गइल बिचार
एक फूल के 'पंखुरी भइल हजार'

---

१. हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक-कवि श्री त्रिलोचन शास्त्री ।
२. भोजपुरी के भारतेन्दु पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय ।
३. अवधी में रचित त्रिलोचन शास्त्री जी के बरवै-संग्रह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्द-संकेत

अइसन (क्रि० वि०)—ऐसा।
अँउघल (अँघुआइल) (वि०)—निद्रित।
अकसर (क्रि० वि०)—अकेला।
अकाज (सं०)—नुकसान।
अँखिआन (सं०)—परख।
अगराइल (वि०)—हर्षित।
अगहरिया (सं०)—अग्रणी।
अंगेज, अँगरेज (सं०)—सहन (शरीर से)।
अगोरल (क्रि०)—पहरा देना।
अचके (क्रि० वि०)—अचानक।
अछइत (क्रि० वि०)—मौजूद रहते हुए।
अछरंग (सं०)—कलंक (झूठा)।
अजगुत (वि०)—अभूतपूर्व।
अँटकर (सं०)—अंदाज।
अनघा (वि)—प्रचुर।
अनते (क्रि० वि०)—अन्यत्र।
अनराज (वि०)—नाराज।
अनेस (सं०)—अंदेशा।
अपने आगी-काठी जरल (मु०)—अत्यन्त डाह या क्रोध से स्वयं मनही मन जलना।
अबगे (क्रि० वि०)—अभी-अभी।
अबर (वि०)—निर्बल।
अलोत (सं०)—आड़, आँख से ओझल।
असकति (सं०)—आलस्य।
अह-जह में परल (मु०)—असमंजस में पड़ना।
आँगछ (सं०)—लक्षण
आह (सं०)—अन्दाज।
उजिआर (वि०)—उज्वल, प्रकाशित।
उझंख (वि०)—पत्रहीन (वृक्ष), सुनसान।
ऊखम (सं०)—बरसात की गर्मी जब हवा नहीं चलती हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओने (क्रि० वि०)–उधर ।
कछु (सं०)—कछुआ ।
कछावल (क्रि०)—जी चुराना ।
कनपातर (वि०)—कान का पतला, दूसरों की बातों में आनेवाला ।
करकर (सं०)—व्यर्थ का हो—हल्ला ।
कुचरा (सं०)—इधर की बात उधर करके झगड़ा लगानेवाला ।
कूर (वि०)—दूसरों का भला न देख सकनेवाला ।
केकर (सर्व०, वि०)–किसका ।
कोरा (सं०)—गोद ।
गतर-गतर (सं०)—अंग-प्रत्यंग ।
गधबेर (सं०)—गोधूलि ।
गर (सं०)—गला, गर्दन ।
गरदाँव (सं०)—पगहे का वह भाग जो पशु के गले में रहता है ।
गार्ह (सं०)—संकट ।
घिनावन (वि०)–घृणा उत्पन्न करनेवाला ।
घेंघ (सं०)—गला ।
चउलि (सं०)—मजाक ।
छुऽ-छुऽ पाती लोर ढारल (मु०)–फूट-फूट कर रोना ।
छ्तिहर (वि०, सं०)–जिस (पात्र) का जल या अन्न ग्राह्य न हो।
जगि (सं०)—यज्ञ ।
जहुआइल (क्रि०)—गलत दिशा में जाना ।
जुगुत (क्रि० वि०)–योग्य ।
जून (सं०)—समय ।
जोग (सं०)—जादू-टोना ।
जोर (सं०)—रस्सी ।
जोन्ही (सं०)—तारा (छोटा), तारिका ।
झगाठ (वि०)—बहुत डालों-पत्तों वाला सघन पेड़ ।
झवान (वि०)—हतोत्साह, स्याह ।
झाँवर (वि०)–धूमिल ।
टहकार (वि०)—चटक या चमक वाला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टाँठ (वि०) —पुष्ट; कड़ा ।
तमहा (वि०)—ताँबे के रंग का ।
तरकुल (सं०)—ताड़ का पेड़ ।
तरवा (सं०)—पैर का तलवा ।
तारू (सं०)—तालू ।
दाजा-हिस्की (सं०)—स्पर्धा ।
दूलम (वि०)—दुर्लभ ।
दोच (सं०)—द्विविधा ।
निभरम (वि०)—भ्रम रहित, अभय ।
निसा (सं०)—नशा ।
निसइल (सं०)—नशाखोर ।
नुनहँड़ (सं०)—नमक रखने का मिट्टी का पात्र ।
नेवर (वि०)—नीचा, कम ।
पँजरा० (वि०)—समीप ।
पतिआइल (क्रि०)—किसी के कथन को सही मानना ।
परिकल (क्रि०)—आदतन बार-बार पहुँचना ।
पँवरकिहा (सं०)—तैराक ।
पसन से (क्रि० वि०)—अच्छी तरह ।
पसनहा (वि०)—परीक्षा करके पसंद करनेवाला ।
पसार (सं०)—प्रसार ।
पह (सं०)—पौ ।
पिठाँस (सं०)—पीठ ।
पुलुई (सं०)—पेड़ या पौधे का पल्लव युक्त अगला भाग ।
पून सं०)—पुण्य ।
पैंड़ा (सं०)—मार्ग ।
फरछीन, फरिछ (वि०)—स्वच्छ ।
बघुआइल (क्रि०)—बाघ की तरह गुर्राना ।
बँड़ेर (सं०)—खपरैल छप्पर का सब से ऊपरी भाग ।
बरजोर (वि०)—जबर्दस्त ।
बुझला (क्रि० वि०)—मानो, संभवतः ।
बे-कहल वि०)—अपने मन का, किसी का कहा न माननेवाला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक (सं०)—सूझ, बुद्धि ।
भकुआइल (क्रि०)—किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना ।
भटका (सं०)—खुलल (मु०)—सूझना, समझ जाना ।
भा (क्रि० वि०)—या, अथवा ।
भिरी (क्रि० वि०)—निकट, पास ।
मूर (सं०)—मूलधन ।
लग (क्रि० वि०)—समीप
लूरि (सं०)—ढंग, कला ।
सगरे (क्रि० वि०)—सर्वत्र ।
सजी (वि०)—सभी ।
सदईं (क्रि० वि०)—सदैव ।
सबहर (वि०)—सभी का, सम्मिलित ।
सरेह, सरेहि (सं०)—खड़ी फसल से भरा क्षेत्र ।
सहार (सं०)—सहाय ।
सुकलान (सं०)—सदुपयोग ।
सेवर (वि०)—अधपका (मिट्टी का पात्र) ।
सेसर (वि०)—श्रेष्ठ ।
सोपह (सं०)—सर्वनाश ।
हहास (सं०)—हो-हल्ला (प्रसिद्धि का) ।
हाली (क्रि० वि०)—शीघ्र ।
हितई (सं०)—रिश्तेमंदी ।
हिआव (सं०)—साहस ।
हीक भर (मु०)—भर पेट, यथेष्ट ।
हुंड़ार (सं०)—भेड़िया ।
हूब (सं०)—क्षमता ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.